RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324
साल-१०, अंक-२, पृष्ठ-३६, मूल्य-₹ ३०, दिनांक : ०१ जुलाई-२०२४
Year-10, Issue-2, Page-36, Price : ₹ 30, Date : 01 July-2024

CRIME FORCE

.... Always Alert, To Stop The Crime

सत्यमेव जयते

भारत के मोस्ट वांटेड टेररिस्ट-गेंगस्टर्स को

केनेडा का राज्याश्रय

बरीन्दर धालीवाल | शकिएल बशरा | अमरप्रीत साम्रा | अेन्डीसेन्ट पीअेरो | सम्रुप गील | सुखदीप पंसाल

गुरप्रीत धालीवाल | जगदीप चीमा | रविन्दर साम्रा | रीचार्ड जोसेफ विटलोक | सुम्दीश गील

कांगड़ा: यहां चौड़ी छाती वीरों की....

SCOPE OF SERVICES

- Anesthesia & Pain Management
- Arthroplasty & Joint Replacement
- Cardiology
- Cardio-vascular Thoracic Surgery
- Dentistry
- Dermatology & Hair Transplant
- Emergency Medicines
- ENT
- Gastroenterology & Hepatology
- General & Laparoscopic Surgery
- Intensive & Critical Care
- Internal Medicine
- Maxillofacial Surgery
- Intervention Radiology
- Neurology & Electrophysiology
- Neuro & Spine Surgery
- Oncology, Onco. Surgery & Radio Oncology
- Orthopedics, Joint replacement & Trauma
- Pathology & Microbiology
- Plastic & Reconstructive Surgery
- Pediatric / Pediatric Neurology
- Psychiatry
- Pulmonology
- Radiology
- Urolog & Nephrology
- MRI

SUPPORTIVE SERVICES

- Administration
- Ambulance Services
- Bio - Medical
- Blood Storage
- Canteen
- CSSD
- Housekeeping & Security
- Pharmacy
- Physiotherapy

એક માનવ સેવા મંદિર

Gokul Hospital®

શ્રેષ્ઠતા - સત્યતા - પારદર્શકતા

GOKUL HOSPITAL 34 YEARS IN SERVICE

VIDHYANAGAR ROAD
+91 99043 99043

KUVADAVA ROAD
+91 88663 83108

RAJKOT - GUJARAT - INDIA

NABH ACCREDITED — PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE

तंत्री स्थानसे...

सोशियल मीडिया में अश्लीलता: भद्र समाज के लिए घातक

आज के डिजिटल युग में सोशियल मीडिया संवाद, जानकारी और मनोरंजन का मुख्य माध्यम है। लेकिन उसके फायदे के साथ एक गंभीर समस्या भी पैदा होती है, सोशियल मीडिया पे अश्लील साहित्य का फैलावा। सोशियल मीडिया पे कई बार अश्लील और अनैतिक सामग्री दर्शाई जाती है। उसकी नकारात्मक असरें समाज के सभी वर्गोपर होती है। ऐसा अश्लील कंटेंट व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, एवं भावनात्मक विकास प्रक्रिया में प्रतिकूल प्रभाव डालते है। समाज में नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को नष्ट करता है।

इस से बच्चो और महिलाओं के प्रति हिंसा, शोषण की घटनाए, सायबर क्राइम, इमोसनल ब्लैकमेलिंग और ट्रोलिंग जैसी कई समस्याएं पैदा होती है।

इस दूषण को नियंत्रण में लेने के लिए जिम्मेवार तन्त्र को असरदार कदम उठाने चाहिए और उसका कड़े रूप से नियमन करके समाज को बचाना चाहिए।

सोशियल मीडिया शक्तिशाली माध्यम है, लेकिन उसका योग्य और व्यवहारपूर्ण उपयोग से स्वस्थ और सुरक्षित डिजिटल वातावरण खड़ा करने के लिए अश्लील कंटेंट के सामने सामूहिक प्रयासों ही उसका समाधान है।

सत्यमेव जयते

RNI Regd. No. GUJMUL/2016/68324

साल-१०, अंक-२, पृष्ठ-३६ मूल्य-₹३०

दिनांक : ०१ जुलाई-२०२४

"Crime Force" (Monthly)

Volume-10, Issue-2, Price-₹30

1st July-2024, Page: 36

मालिक-प्रकाशक-मुद्रकश्री

रणजीतसिंह जादव

Mob. : 098250 63283

तंत्रीश्री

विजय साणथरा

Mob. : 075750 55333

एडमीन चीफ

विपुल ब्रह्मभट्ट

Mob. : 098250 10288

सहतंत्रीश्री

सतीष सोलंकी

Mob. : 092746 76760

सालाना लवाजम

भारत में : ₹ ३६०/-

विदेश में : ₹ २५००/-

मुख्य कार्यालय

राज कोम्प्लेक्ष, स्टार प्लाझा के सामने,

फुलछाब चौक, राजकोट - ३६० ००१

Website : www.crimeforce.in

E-mail: crimeforce9@gmail.com

London (U.K.) Bureau Office
NISHANT K. JANI
Mo. +44 7999470980
43 Bowrons Ave,
Wembley,
HA0 4QS
London (U.K.)

Mumbai - Bureau Office
Akashbhai P. Shah
Mo.+096196 70007
Arham Group
Office No.24, 1st Floor,
110-Kakakuwa Bldg.,
3rd Bhoiwada Corner,
Bhuleshwar,
Mumbai-400002

Surat - Bureau Office
Ramjibhai N. Panseriya
Mo. 97125 74032
Vinod M. Lavri
Mo. 9825112244
Plot No. 1
Amul Society
Near Shreeram Marbal
bhatar, Surat-394510

Baroda - Bureau Office
Yagnesh Thakkar
Mo. 099255 55400
Shailesh Thakkar
Mo. 063548 60273
Think Overseas
301 Annapurna Complex,
Opp. Makarpura Police Station,
B/s Aangan Tower,
Manjalpur, Vadodara-390011

Ahmedabad - Bureau Office
Hitesh P. Prajapati
Mo. +084600 03121
Parth P. Shah
Mo.+097269 06767
328 Sangath Mall, Opp.
Vishwakarma Engg. Collage,
Motera, Sabarmati,
Ahmedabad - 380 005.

Junagadh Bureau Office
Ashok Makwana
Mo.+9199247 69400
Apco Autosales Pvt. Ltd.
Alpha Vidhaya Sankul,
Rajkot Highway,
Vill - Vadal.
Junagadh-362 001

मुद्रण स्थान : श्री हरि ओफसेट, आरती अेस्टेट, ढेबर रोड (साउथ), राजकोट-३६०००२

CRIME FORCE HELPLINE No. : +91 75750 55111

अनुक्रमणिका...

राजकीय	05
ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी	07
टेररीझम	10
नेशनल क्राईम स्टोरी	13
रेड एलर्ट	16
राष्ट्रीय सुरक्षा	18
अनसंग हिरोझ	23
डरावनी दुनिया	27
स्वास्थ्य	31
मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें	33

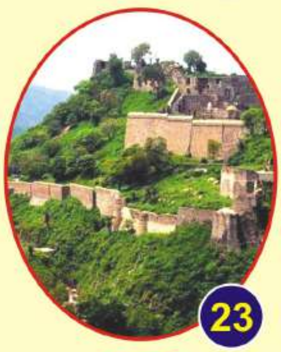

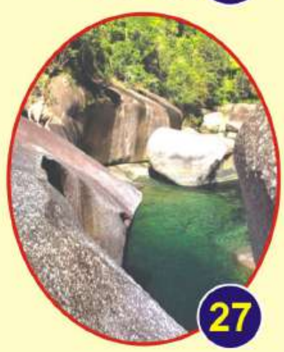

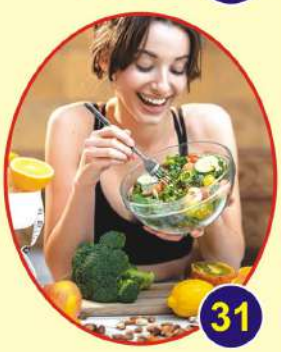

पुनर्जीवन होती कोंग्रेस के सामने कई चुनौतियां

तेरह साल तक गुजरात के मुख्यमंत्री और दश साल तक देश के प्रधानमंत्री रहने के बाद नरेन्द्र मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद सम्पूर्ण रूप से राजकीय संयोग में सरकार चलाने का पहला अनुभव का सामना करना पड़ेगा। जैसे पहले अनेक कानूनों विपक्ष रहित संसद में ज्यादातर ध्वनि मत से लागु करवाया था, लेकिन अब ऐसा नहीं होगा और क्योंकि विपक्ष सिर्फ संख्याबल से मज़बूत ही नहीं नए जुस्से से एकजुट हो गया हैं। अब सरकार के सामने अनेक पडकार होंगे।

दुसरी ओर देखे तो २०२४ के लोकसभा चुनाव ने कोंग्रेस पार्टी को पुनर्जीवन दिया है। कोंग्रेस ने अपना आत्मविश्वास फिर प्राप्त किया है ये बहुत बड़ी बात है। यह फ़र्क राहुल और प्रियंका की बॉडी लैंग्वेज मे साफ दिखाई पड़ता है। इसके साथ ये भी स्पष्ट हो गया कि कोंग्रेस में अभी गांधी परिवार स्थान सर्वोच्च है और पार्टी पर इस परिवार का पूरी तरह से नियमन रहेगा। उसका सीधा मतलब है कि पार्टी में टीम राहुल का निर्णय अंतिम रहेगा।

राजकीय

◆ रणजीतसिंह जादव ◆

अगर कांग्रेस २०२४ के चुनाव नतीजे को नहीं समझ पाएगी तो ये नई लहर उसको नुकसान पहुंचा सकती है। कोंग्रेस को इस तीन मुद्दे पर ध्यान देना पड़ेगा। सबसे पहले तो कांग्रेस को पी.एम. नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की सफलता और निष्फलता का अंदाज़ा लगाना आवश्यक है। प्रजा के सामने अपना आत्मविश्वास बनाए रखना यह भी एक बात है। मोदी जिस स्तर पर खड़े हैं उसका सच्चा आकलन करना कोंग्रेस की आगे की रणनीति के लिए बहुत ही जरूरी है। कोंग्रेस

को यह भी सोचना पड़ेगा कि भाजपा के पास खुद का बहुमत नहीं है फिर भी मोदी का नेतृत्व एनडीए सरकार सरकार को स्थिरता दे पाएगा या नहीं ? दुसरी ओर मोदी की प्राथमिकता यह है कि लोगों को भरोसा दिलाया जाए की एनडीए की सरकार स्थिर है और उसके पर कोई संकट या जोखिम नहीं है। भारत जेसे जटिल समस्याओं का सामना करते देश में केन्द्? में स्थिर सरकार होना बहुत बड़ी उपलब्धि है। मोदी के लिए केन्द्र में स्थिर सरकार देने के संघर्ष के बीच मोदी और राहुल की लड़ाई आनेवाले महीनो में क्या हालात पैदा करेंगे, उस पर पूरे देश की नज़र रहेगी।

कोंग्रेस को यह भी सोचना पड़ेगा कि भाजपा के पास खुद का बहुमत नहीं है फिर भी मोदी का नेतृत्व एनडीए सरकार सरकार को स्थिरता दे पाएगा या नहीं ? दुसरी ओर मोदी की प्राथमिकता यह है कि लोगों को भरोसा दिलाया जाए की एनडीए की सरकार स्थिर है और उसके पर कोई संकट या जोखिम नहीं है।

दूसरा, कोंग्रेस को समझना चाहिए कि स्थाई दलों के साथ समाधान करने से केरल (आईयूएमएल), महाराष्ट्र (एमवीए), तमिलनाडु (डीएमके) और यूपी (सपा) को सीट्स मिली है। यूपी में ऐसा ही हुआ, विपक्षी ताकत से नहीं लेकिन सरकार की हुई बड़ी गलतियों से भाजपा को नुकसान हुआ है। अगर प्रचार युद्ध की शुरुआत में ४०० पार का ओवर कॉन्फिडेंट ना दिखाया होता तो, यूपी, राजस्थान, बंगाल में अच्छे प्रत्याशी उतारे होते और यूपी में भाजपा को अंदरूही कलह की वजह से भाजपा को २७२ सीटे ना मिली।

अब कोंग्रेस को स्थानीय दलों के साथ समाधान करके साथ ही राष्ट्रिय दल होने के कारण सब को साथ लेके चलने की नीतियां की अमलवारी करना आवश्यक है क्योंकी अभी कांग्रेस इतनी मजबूत नही है की वो स्ट्रेटजिक राज्यों में अपने खुद के दम पे अकेले चुनाव लडे। संसद और कांग्रेस के लिए सहानुभूति रखनेवाली यूट्यूब चैनल के संवादों में वो दिल जीत क्यूं ना ले, लेकिन जमीनी तौर पर स्थाई शासन में भाजपा को टक्कर देना एक अलग ही राजनीति है।

चुनाव नतीजों के बाद पत्रकार परिषद में राहुल ने कहा था कि, भारतीय राजनीति में एक ''टेक्टोनिक स्ट्रेटजिक शिफ्ट'' आया है। राहुल की यह बात सच भी हो सकती है और ये उसका अति आत्मविश्वास भी साबित हो सकता है। अगर मोदी केन्द्र में स्थिर सरकार दे सके और महाराष्ट्र, जारखंड, हरियाणा की विधानसभा चुनाव में भाजपा अपना वोट शेर बचा पाता है तो जमीनी स्तर पे राजनीति बदल गई ऐसा कह नहीं सकते। अब कांग्रेस का सबसे बड़ा काम जो दलितों और पिछड़े हुए लोगों ने उसको मदद की है उसका भरोसा कायम रखना। आज भी देश में महत्वपूर्ण राज्यो में स्थानिक दलों जो चुनौतियां दे रहें हैं वो वास्तविकता है। अगर भाजपा को दबाव में लाना है तो कोंग्रेस को स्थानिक दलों के साथ गठबन्धन बनाना पड़ेगा।

एक चुनौती कोंग्रेस के सामने यह है कि उसको ये कभी भी नहीं मान लेना चाहिए कि, भाजपा या उसकी विचारधारा बदली नहीं है। एक संधोधक ने अपने अध्ययन में बताया है कि, ज्यादातर बिन भाजपा पार्टियां आज भी यह मानने को तैयार नहीं है कि, मुस्लिमो के सक्रिय समर्थन के बिना उसको सफलता नहीं मिल सकती थी। भाजपा, कोंग्रेस और स्थानिक दलों सब समझते है कि, मुस्लिमो के वोट का योगदान कुछ महत्वपूर्ण बैठकों पर हार जीत का फैसला कर गया है।

भाजपा भावी रणनीति भी उस आधार पर ही बनाएगी और वो भी पिछले चुनाव जैसी ही होगी। मतलब, भाजपा कुछ नया लानेवाला नहीं है पुराने राग ही छेड़ेगा। वो यह भी तहोमत लगाएगी कि, कोंग्रेस अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण कर रही हैं। कोंग्रेस को यह देखना है कि ऐसे आरोपों को अपने पर आने ना दे।

खतरनाक कोलंबियन लेडी ड्रग माफिया ग्रीसेल्डा ब्लैंको रेस्ट्रेपो उर्फ 'गॉड मदर'

दोस्तों, पीछले अंक में हमने दुनिया के खतरनाक मेक्सिकन ड्रग माफिया जोकविन आर्चीवाल्डो गुजमैन लोएरा की बात की थी। आज हम यहां पे ऐसे ही एक खतरनाक कोलंबियन लेडी ड्रग माफिया, ग्रीसेल्डा ब्लैंको रेस्ट्रेपो उर्फ गॉड मदर की।

ग्रीसेल्डा ब्लैंको रेस्ट्रेपो का जन्म १५ फ़रवरी, १९४३ को कार्टाजेना, बोलिवर, कोलंबिया में हुआ था। उनकी माता का नाम एना रेस्ट्रेपो था। जब वह तीन साल की थी तब उसकी मां उसको छोड़कर दक्षिण में मेडेलिन चली गई। इसी वजह से वो छोटी उम्र में ही अपराधिक जीवन शैली में आ गई क्योंकि मेडेलिन सालों से अपनी सामाजिक - आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परेशानियों को झेल रहा था। ब्लैंको के पूर्व प्रेमी, चार्ल्स कोस्बी ने बताया कि, ११ साल की उम्र में, ने सबसे पहले कोलंबिया में मैजुआनाउसने कथित तौर पर अपने घर के पास एक पॉश इलाके से एक बच्चे का अपहरण किया, फिरौती की कोशिश भी और बाद में उसे गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। किशोरी होने से पहले ही ब्लैंको एक पिकपोइंट बन गई थी। अपनी मां के प्रेमी के यौन शोषण से बचने के लिए वह १९ साल की आयु में घर से भाग गई। २० साल की उम्र तक शहर के केन्द्र में जीवित रहने के लिए चोरी का सहारा लिया।

ब्लैंको कोलंबिया और मियामी और न्यूयॉर्क जैसे बड़े उत्तरी अमेरिकी शहरों के साथ साथ कैलिफोर्निया के डीलरों के बीच

ईन्टरनेशनल माफीया स्टोरी
◆ पार्थ शाह-अहमदाबाद ◆

कोकीन व्यापार की स्थापना में एक प्रमुख व्यक्ति थी। उसका वितरण नेटवर्क, जो संयुक्त अमेरिका और कोलंबिया में फ़ैला था, प्रति माह ८० मिलियन डॉलर कमाता था।

ब्लैंको और उनके पहले पति कार्लोस ट्रुजिलो ने सबसे पहले कोलंबिया में मारीजुआना का कारोबार शुरू किया था। १९६४ में ट्रुजिलोसे तलाक लेने के बाद, ब्लैंको ने एक छद्म नाम से, नकली दस्तावेजों के साथ अवैध रुप से संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवेश किया; वह अपने तीन बच्चों और दूसरे पति अल्बर्टो ब्रावो, मेडेलिन कार्टेल के लिए कोकीन तस्कर के साथ फ्रांस, न्यूयॉर्क में बस गई। उन्होंने न्यूयॉर्क शहर में एक फलता फूलता ड्रग ऑपरेशन स्थापित किया। हालांकि, नौ साल बाद अप्रैल १९७५ में, ब्लैंको की अधिकारियों ने पहचान कर ली और उसके तीस अधीनस्थों के साथ संघीय ड्रग साजिश के आरोपो में उसे दोषी ठहराया। सजा से बचने के लिए पूरा परिवार कोलंबिया भाग गया। वह मियामी में एक नया ड्रग ऑपरेशन शुरू करने के लिए १९७० के दशक के उत्तरार्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका लौट आई।

उसकी वापसी कई हिंसक सार्वजनिक संघर्षों की शुरुआत के साथ हुई – विशेष रूप से, प्रति वर्ष सैंकड़ो हत्याएं, जो १९८० के दशक के दौरान मेट्रो मियामी क्षेत्र को त्रस्त कर देती थीं, एक समय जिसे मियामी ड्रग युद्ध के रुप में जाना जाता था। यह एक दौर था जबकोकीन की आमद को समाप्त करने के लिए कानून प्रवर्तन द्वारा किए गए संघर्ष ने CENTAC-26 (सेन्ट्रल टेक्टीकल यूनिट) के निर्माण को जन्म दिया, जो मियामी –डेड पुलिस विभाग और ड्रग प्रवर्तन

ब्लैंको के तीन पति और चार बच्चे थे। उसका सबसे छोटा बेटा माइकल कोरलियों ब्लैंको उसके तीसरे पति, डारियो सेपुलवडा से हुआ। सेपुलवडा ने उसे १९८३ में छोड़ दिया, कोलंबिया लौट आया और माइकल का अपहरण कर लिया क्योंकि उसके और ब्लैंको के बीच माइकल किसके साथ रहे उसके बारे में सहमति नहीं बन पाई थी। ब्लैंको ने कोलंबिया में सेपुलवेडा की हत्या की सुपारी दी थी और माइकल को अपने साथ वापस अमेरिका लेकर आ गई। मियामी न्यू टाइम्स के अनुसार, '' माइकल के पिता और बड़े भाई -बहन सभी वयस्क होने से पहले ही मारे गए थे''।

प्रशासन (DEA) एंटीड्रग ऑपरेशन के बीच एक संयुक्त ऑपरेशन था।

१७ फरवरी, १९८५ को ब्लैंको को एजेंटो ने उसके घर से गिरफ़्तार किया और उसके बाद उस पर कोकीन के निर्माण, आयात और वितरण की साजिश रचने का आरोप लगाया गया। इस मामले की सुनवाई न्यूयॉर्क शहर की संघीय अदालत में हुई, जहां उसे दोषी पाया गया और १५ साल की जेल की सज़ा सुनाई गई।

अपनी सज़ा काटते समय, उस पर फ्लोरिडा राज्य द्वारा पहली डिग्री की हत्या के तीन अतिरिक्त आरोप लगाए गए। अभियोजन पक्ष ने ब्लैंको के सबसे भरोसेमंद हिटमैन जोर्ज अयाला के साथ एक सौदा किया, जो यह गवाही देने के लिए सहमत हुआ की ब्लैंको ने उसे हत्याएं करने का आदेश दिया था; हालांकि, अयाला और राज्य के अटोर्नी ऑफ़िस में कार्यरत दो महिला सचिवों के बीच फोन सेक्स स्कैंडल से संबंधित तकनीकी कारणों से मामला खत्म हो गया। १९९८ में, ब्लैंको ने दूसरी डिग्री की हत्या के तीन मामलों में दोषी ठहराया और उसे २० साल जेल की सज़ा सुनाई गई, जो एक साथ चलेगी। २००२ में, आजीवन सिगरेट पीने वाली ब्लैंको को जेल में दिल का दौरा पड़ा।

२००४ में, उनके कमज़ोर स्वास्थ्य को देखते हुए, उन्हें संयुक्त राज्य अमेरिका की जेल से अनुकंपा रिहाई दी गई और वापस

कोलंबिया भेज दिया गया।

३ दिसम्बर, २०१२ को, ब्लैंको और उसकी गर्भवती बहू मेडेलिन में २९ वीं स्ट्रीट के कोने पर कार्डिसो कसाई की दुकान पर गए थे, जैसे ही वह बाहर निकली, मोटरसाइकल पर सवार एक हत्यारे ने उसके सिर में दो गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। यह काम मियामी ड्रग युद्ध के दौरान ब्लैंको द्वारा अपनाई गई हत्या शैली की नकल थी।

भारत के मोस्ट वांटेड टेररिस्ट-गेंगस्टर्स को

केनेडा का राज्याश्रय

भारत के जो मोस्ट वोन्टेड टेररिस्ट या गेंगस्टर्स फरार है उसको या तो पाकिस्तान आश्रय देता है या फिर केनेडा। दोनों देशों को यह मालूम है कि ऐसे आतंकवादी या गेंगस्टर्स को अपने देश में आश्रय देने से देश को सिर्फ़ नुकसान ही होगा। आज आप पाकिस्तान की हालत देख ही रहे है। सिर्फ़ हमारा दुश्मन है इसलिए ऐसे आतंक वादियों को आश्रय है। पाकिस्तान के ज्यादातर लोगों ने भी स्वीकारा है कि ऐसे आतंकवादियों को पनाह दे कर पाकिस्तान ने खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है। क्योंकि वहां जो अराजकता का माहौल की वजह ही वो आतंकवादी है यह सब वहां की प्रजा जानती है। अब पता नहीं क्यूं केनेड़ा भी पाकिस्तान की राह पर चल रहा है। वहां ज्यादातर खालिस्तानी आतंवाढ़ीयो पनाह ले रहे हैं।

खालिस्तानवादी आतंकवादी हरढीपसिंह निज्जर की हत्या के बाढ गिरफ्तार किए गए तीन भारतीय युवकों भारतीय एजेंसी के एजेंट है ऐसा आरोप केनेडा की एजेंसियां लगा रही है। केनेडा की एजेंसियां परोक्ष रूप से यह प्रमाणित करना चाहती है की निज्जर की हत्या भारत ने करवाई है। इसलिए वो यह सब हंगामा कर रहा है।

वैसे देखा जाए तो आगे बताया ऐसे ही हुआ है केनेडा ने ख़ुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है, टेररिस्ट कम गेंगस्टरो को सिर्फ़ पनाह नहीं ढी लेकिन साथ साथ उन्हें पाला भी है। अब उधर आतंकवादियों और गेंगस्टरो के बीच वर्चस्व की लड़ाइयां चल रही है। जिसमें निज़्ज़र और सुखा दुन्नांके नामके ढो गैंगस्टरो की लाशे गिर गई है।

भारतीय एजेंसियों ने नेशनल इन्वेस्टिगेशन ऐजेंसी (एनआईए) की मोस्ट वांटेड टेररिस्ट और गैंगस्टरो की एक सूचि तैयार की है। इस सूचि में १७ मोस्ट वांटेड टेररिस्ट या गैंगस्टर ऐसे है जो केनेडा में रहते हैं या फिर केनेडा के साथ मिले हुए है। यानि कि अमेरिका या युरोप के देश में रहते है और केनेडा आते जाते रहते है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा निजी तौर पे आतंकवादी जाहीर किए हुए यह सब बढमाशो केनेडा में बैठे बैठे ही पंजाब और आसपास के राज्यों में गैंग्स चलाते हैं, वसूली करते है और हत्याएं भी करवाते है। कई और आतंकवादी प्रवृतियां भी करते है।

अब तक यह सब गैंगस्टर केनेडा में अपराध नहीं करते थे ऐसा माना जाता था

टेररीझम

◆ विजय साणथरा-राजकोट ◆

NIA Realease 43-most-wanted-list

लेकिन निज्जर की हत्या से ये बात तय हो गई की ऐसा नहीं है। ऐसा कहा जाता है कि निज्जर की हत्या में गोल्डी ब्रार का कनेकशन है। गोल्डी ब्रार अमेरिका में रहता है ऐसा माना जाता है लेकिन उसका साथी अर्श दल्ला केनेडा में ही रहता है। निज्जर और अर्श दल्ला एक दूसरे से नजदीक है ऐसा माना जाता था लेकिन निज्जर की हत्या में गिरफ़्तार हुए लोगों के गोल्डी ब्रार के साथ रिश्ते से यह बात गलत साबित हुई। सतिंदरजीत सिंह उर्फ गोल्डी ब्रार के सम्बंध भारत की जेल में बंद गेंगस्टर लौरेंस बिश्नोई के साथ है। बिश्नोई उत्तर भारत में सबसे बड़ी गैंग चलाता है। गोल्डी ब्रार के सिवा केनेडा में रहते भारत के मोस्ट वांटेड टेररिस्ट और गैंगस्टर्स में अर्श दल्ला, लखबिरसिंह उर्फ लांडा, हरप्पित उप्पल जैसे नामचीन लोगों है। अर्श दल्ला खालिस्तानि आतंकवादीयों का गॉडफादर माना जाता है। बब्बर खालसा इंटरनेशनल का लखबीरसिंह लांडा पंजाब के तरण तरण से आता है और पंजाब में चल रही आतंकवादी गतिविधियों में शामिल है। पीछले साल भारत लाया गया सुखप्रीतसिंह बुड्डा भी केनेडा में रहकर खालिस्तानी टेरर मॉड्यूल चलाता था। हरप्रीत ऊप्पल लो प्रोफाइल रहकर कार्य करता है लेकिन ड्रग्स का बहुत बड़ा डीलर है।

उसके इलावा जसदीपसिंह, विरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ काला राणा, जोगिंदरसिंह, विक्रमजीतसिंह उर्फ विक्रम ब्रार, दरमनसिंह उर्फ दरमनजोत कहलों, सुरेन्द्रसिंह उर्फ चीकु, सन्नी डागर, नवीन डब्बास उर्फ नविन बाली, जगसीरसिंह उर्फ जग्गा, भूपिंदरसिंह उर्फ भूपी राणा और दलेरसिंह ये सब केनेडा में रहते है और गैंगस्टर/टेररिस्ट सुची में है।

केनेडा में रहते ज्यादातर गेंगस्टर्स पाकिस्तान के जरिए भारत में सप्लाय होते ड्रग्स के काले धंधे में शामिल है। पाकिस्तान चाहता है कि पंजाब में खालिस्तानी मूवमेंट फिर से सक्रिय हो जाए। इसी वजह से ही ये सब गैंगस्टर्स खालिस्तानी मूवमेंट का हिस्सा बन गए है। ये गेंगस्टर्स पाकिस्तान की मदद से भारत में शस्त्रों, विस्फोटकों को घुसाते है।

एनआईए आतंकवाद विरोधी एजेंसी है इसलिए उसकी सूची में ज्यादातर आतंकवादी गतिविधियों के साथ जुडे हुए गैंगस्टर्स है लेकिन उसके सिवा दूसरे भी भारतीय गैंगस्टर है जो केनेडा में रहकर गैंग्स चलाते है। गौरव पत्याल उर्फ लकी और थोड़े समय पहले ही सलमान खान के घर पर फायरिंग करनेवाला अनमोल बिश्नोई भी केनेडा में होने का माना जाता है। अनमोल और लकी दोनों केनेडा और अमरीका के बीच आते जाते रहते है।

उसके इलावा सतवीरसिंह वोरिंग उर्फ रामन जज, सनावर धील्लोन, चरणजीत सिंह

उर्फ रिंकु बिहला, गुरपिंदरसिंह उर्फ बडा दल्ला समेत के गैंगस्टर्स भी केनेडा में ही रहते है।

केनेडा इस सभी आतंकवादियों के सामने कोई कानूनी कारवाई नहीं करता क्योंकि केनेडा में सिख समुदाय बड़ा और ताकतवर है। ये सब गैंगस्टर कम टेररिस्ट का सीख समुदाय पे मजबूत फक्कड़ है इसलिए चुनाव में सीखो का वोट डलवाने में मदद रुप होते हैं उसके बदले में उधर के राजकीय नेताए उन लोगों को बचाते रहते है। इसलिए तो जब भी पंजाब अपराधियों पर गाज गिरती है तब वे केनेडा भाग जाते है और केनेडा पहुंचते ही खालिस्तानवादियो उसको अपने नेटवर्क में शामिल कर लेते है। आतंकवादियों का पोषण करके केनेडा पाकिस्तान के रास्ते पर ही आगे बढ़ रहा है और आग के साथ खेल रहा है। आग के साथ के खेल में पाकिस्तान उस हद पर सुलग उठा है कि अब पूरी दुनिया के लोग पाकिस्तान से दूर भागते है। पाकिस्तान ने १९८० के दशक में खालिस्तानवादी और जिहाद के नाम से बेकसूर लोगों की हत्याएं करते मुस्लिम कट्टरवादी आतंकियोको पाल कर पाकिस्तान में आश्रय दिया। अब यही आतंकवादियों पाकिस्तान के लिए सरदर्द बन गया है। उनकी आतंकवादी गतिविधियां की वजह से पाकिस्तान आतंकवाद का अड्डा बन गया है।

अब केनेडा भी आतंकवाद का अड्डा बन रहा है ये देख ऐसा लग रहा है कि केनेडा में गैंगस्टर्स और आतंकवादियों का आतंक बढ़ेगा तब दुनिया के दुसरे देशों केनेडा से दूरी बना लेंगे। दूसरी एक बात भी समझने वाली है की कोई भी एक्शन का रिएक्शन जरूर होता है। खालिस्तानवादीयों केनेडा में बैठे बैठे भारत में अपराधिक प्रवृतियां करे, आतंक फैलाए तो हमारा देश कुछ ना करे ये संभव नहीं है। हमारे देश को भी अपने देश में होते अपराध और आतंकवाद को नियमन करने का अधिकार है ये देखते हुए ऐसा लग रहा है आनेवाले समय में भारत भी इसका रिएक्शन ज़रूर देगा। केनेडा में रहते हुए आतंकवादियों का खात्मा करने के लिए भारत को अपना नेटवर्क खड़ा करना ही पड़ेगा।

केनेडा के पास अभी भी समय है, सुधरने का। क्योंकि उसके सुधरने से और भारत विरोधी गतिविधियां के लिए केनेडा को अड्डा बनानेवाले आतंकवादियो को केनेडा से भगाने लगे तो वह उसके फायदे में रहेगा। क्योंकि आनेवाले समय में केनेडा को शांति से रहना है तो यह सब करना पड़ेगा, इसके अलावा उसके पास दूसरा कोई उपाय नहीं है।

थोड़े समय पहले ही एनआईए के चीफ के तौर पे निवृत होनेवाले दिनकर गुप्ता पहले पंजाब पुलिसवड़ा थे। पहले पुलिस में होने से वो केनेडा में बैठे आतंकवादियों की पूरी कुण्डली जानते थे। इसलिए उसने खालिस्तानीवादियों पर जब्बरदस्त एक्शन लिया था। गुप्ता के दो साल के कार्यकाल के दौरान एनआईए के पास खालिस्तानवादियों जबरदस्त डेटाबेझ आ गया है। केनेडा और पाकिस्तान ये दोनों देशों खालिस्तानवादी आतंकीयो का अड्डा है। इन दोनों देशों में खालिस्तानवादीयो की एक के बाद एक हत्या हो रही है उसके पीछे की वजह ये डेटाबेज है ऐसा माना जा रहा है।

'उड़ता चोर'
जिसने एयरपोर्ट और फ्लाइट में से की ३०० करोड़ की चोरी

नेशनल क्राईम स्टोरी

◆ तेज जोषी-राजकोट ◆

दोस्तों, दुनिया में कई प्रकार के चोर, ठग, लुटेरे, होते हैं जिसका काम होता चोरी करना और लोगों को ठगना । ऐसे चोर तस्कर के बारे में हमने कई बार हमारे मैगझीन में बताया है । लेकिन आज हम आपको ऐसे ठग के बारे में बताएंगे जिससे आप भी अचंबित रह जायेंगे ।

इस दिल्ली के ठग का नाम है, राजेश कपूर जो फ्लाइट में जानेवाले यात्रियों का उनकी हैण्ड बैग में से पैसे और चीजें चुराता था । हाल में ही दिल्ली पुलिस ने उसको गिरफ्त में ले लिया है । पीछले एक साल में राजेश कपूर ने ११० दिन में २०० बार सिर्फ चोरी करने के इराधे से ही फ्लाइट में मुसाफरी की थी । इस दौरान उसने कम से कम २० करोड़ से ज्यादा रूपिए की चोरी की होगी ऐसा पुलिस का मानना है ।

कपूर ने ११ चोरी कबूल कर ली है लेकिन पुलिस अभी और केसो में सबूत ढूंढ रही है । कपूर ने पीछले १ साल में जो २०० फ्लाइट में मुसाफरी की वे सभी फ्लाइट्स के अलावा कपूर कहां से फ्लाइट में बैठा है और कहां उतरा है । सब एयरपोर्ट में हुई चोरी की शिकायतों का डेटा की छान भिन्न पुलीस कर रही है । उससे तो ऐसा लगता है कि कपूर के चोरी के और किस्से सामने आएंगे ऐसा पुलिस को भरोसा है ।

यहां पर दिलचस्प बात यह है कि, कपूर पीछले १५ सालों से इस तरीके से एयरपोर्टस और फ्लाइट्स से चोरी करता है इस के पहले २०१७ में उसके पास से १ चोरी का सबूत मिलने से कपूर को गिरफ़्तार करके जेल में बंद कर दिया गया था । कुछ महीने जेल में

धनिक बिजनेसमैन परिवार का बेटा, अय्यासी की वजह से चोरी के धंधे में आ गया ।

राजेश कपूर की लाइफ स्टोरी बहुत दिलचस्प है । ४२ साल की उम्र का राजेश कपूर अमीर खानदान का बेटा है ।

कपूर के पिता साउथ कोरिया में रहते है वहां उसका बड़ा कारोबार है । जबकि उनकी माता होटल बिजनेस में है । दिल्ली में पहाड़गंज इलाके में उसकी होटलें आई हुई है । कपूर दंपति को दो बेटे थे लेकिन एक बेटे की मौत हो जाने से अब राजेश ही उसका एकमात्र संतान है । लेकिन चोरी की आदतों की वजह से माता पिता ने उसके साथ अपना रिश्ता तोड़ दिया है । कपूर ने लव मैरिज की है और वह अपनी पत्नी के साथ रहता है । उसके इलावा कपूर के संबंधियों में से कोई इसके साथ रिश्ता नहीं रखता ।

कपूर अपनी युवानी में सिंगापोर और मलेशिया में रहा था । सिंगापोर और मलेशिया से लक्सरियस ब्रांड की कॉपी की हुई चीजें इन्डिया में भेजकर बहुत मलाई कमाता था । लेकिन उसको अयासियो की आदत लगने से शराब, जुआं और लडकियों के पीछे सारी कमाई उड़ा देता ।

कपूर इंपोर्ट बिजनेस में होने से बार बार फ्लाइट में मुसाफरी करता था । मुसाफरी के दौरान उसने जाना की, लोग ओवरहेड कंपार्टमेंट में हैंड बैग रखकर लापरवाह होकर सो जाते थे या फिर मूवी देखने जैसा काम करते हैं । और लोगों की लापरवाही का फायदा उठाकर उसने चोरी की शुरूआत की और उसमें वह इतना सफल हो गया की सब धंधे छोड़कर सिर्फ़ इस चोरी के धंधे में ही लग गया ।

कपूर की माता को जब यह सब करतूतों के बारे में मालूम पडा तब उसने कपूर को बहुत समझाया लेकिन वो अपनी आदतें बदलने को तैयार नहीं था, इसलिए माता पिता ने उसके साथ सारे रिश्ते नाते तोड़ दिए ।

बिताने के बाद वो बहार आया था । लेकिन बाद में मालूम नहीं कहां उड़न छू हो गया था, जो अब ७ साल के बाद पुलिस को हाथ लगा है । पुलिस का मानना है कि इस दौरान उसने कम से कम १०० करोड़ के सामान की चोरी की होगी ।

कपूर इस समय गिरफ्त में आया इसकी वजह है पीछले तीन महीने में हुई २ चोरी की घटनाए है । ११ एप्रील को दिल्ली एयरपोर्ट से हैदराबाद जानेवाली फ्लाइट में से एक यात्रिक के ७ लाख रूपए के गहनों की चोरी हुई थी । इस से पहले २ फ़रवरी को अमृतसर से दिल्ली आ रही फ्लाइट में एक मुसाफिर के २० लाख रुपए के गहनों की चोरी हुई थी । इस दोनों की वजह से दिल्ली इन्दिरा गांधी इंटरनेशनल पुलिस की एक स्पेश्यल टीम बनाई गई थी । इस टीम ने

जब सीसीटीवी फुटेज देखने को शुरू किया इस के बाद फिर चोरी हुई थी और उस दोनों फ्लाइट में राजेश कपूर यात्रिक के रुप में मुसाफरी कर रहा था उसकी जानकारी पुलिस को मिली । पुलिस ने कपूर की टिकट बुक करनारी एयरलाइन्स के पास से उसका मोबाईल नम्बर लिया लेकिन यह नम्बर गलत था तब पुलिस का शक और हुआ मजबूत हुआ । पुलिस ने तुरन्त ही अपनी टेक्निकल सर्वेलेंस टीम को उसके पीछे लगा दिया और कपूर का असली मोबाईल नम्बर ढूंढ निकाला ।

इस मोबाईल को ट्रेस कर के उसको गिरफ्त में ले लिया तब मालुम पड़ा की कपूर तो पुराना

पापी है । छानबीन में उसने कबूला की हैदराबाद एयरपोर्ट पर की चोरी उसने की है और चार और चोरी को कबूला । लेकिन जब पुलिस ने अपने तरीके से छानबीन की तो ऐसा लगा की कपूर ११ चोरीओ में शामिल है । जब पुलिस की कड़क तरीके की पूछताछ की वजह से उसने ११ चोरी की कबूलात कर ली ।

कपूर ने ११ एप्रील को चोरी की हुई ज्वैलरी दिल्ली के पहाड़गंज के शरद जैन नामका चोरी का सामान लेने वाले व्यापारी को बेच दिया था । पुलिसने वो ज्वैलरी तो जप्त कर ली लेकिन उसके पहले का चोरी किया हुआ माल वापिस नहीं मिला । कपूर ने कहा है कि वो माल का पैसा उसने जुए और ऑनलाइन गेंबलिंग पे उड़ा दिया । पुलिस को लगता है कि कपूर जूठ बोल रहा है क्योंकि उसकी लाइफस्टाइल लेविश है और जो उसने सब पैसे अग उड़ा दिया होता तो ऐसी लाइफ स्टाईल से नहीं रह सकता । कपूर परिणीत है और उसकी पत्नी उसके साथ ही रहती है । इसलिए पुलिस वो एंगल से भी तपाश कर रही हैं कि वो भी उसमें शामिल तो नहीं है ।

जब कपूर ने उसकी मोड्स ऑपरेंडी के बारे में बताया तो पुलिस दंग रह गई । कपूर महा उस्ताद है वो बिजनेसमैन की तरह बन ठन के एयरपोर्ट जाता और मौका पाते ही जो भी हाथ में आए उठा लेता । अगर एयरपोर्ट से कुछ न मिले तो फ्लाइट में से सामान उठा लेता । वो एकदम बिजनेसमैन की तरह बन ठन के जाता इसलिए कोई भी उस पर शक नहीं करता । कपूर को एयरपोर्ट पर हैंडबैग लेकर आते यात्रियों को देख कर ही पता चल जाता की कौनसी

पीछले एक साल में राजेश कपूर ने ११० दिन में २००से ज्यादा फ्लाइट्स में सिर्फ़ चोरी करने के इरादे से मुसाफरी की थी, इस समय दौरान उसने कम से कम २० करोड़ रुपए से ज्यादा राशि की चोरी की होगी ऐसा पुलिस का मानना है । पीछले १५ साल में कपूर ने सैंकड़ो की संख्या में चोरी की है । उसका एक ही उसूल था जो हाथ में आए उसे उठा लो । केस, ज्वैलरी, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, मोबाईल फोन, लेपटॉप, इंपोर्टेड आईटम्स, परफ्यूम्स, बैग्स समेत उसने अनगिनत चीज़ों की चोरी की है । कोई कोई किस्से में उसने अंडर गारमेंट्स और मेकअप किट की चोरी की है ।

हैंडबैग में कितना माल है । क्योंकि ज्वैलरी की वजह से हैंड बैग के आकार में फर्क पड़ जाता और उसकी पहली पसन्द ज्वैलरी ही रहती । सिक्यूरिटी चेकिंग के समय वो स्कैनर पर अपनी नज़र रहे उस जगह पर खड़ा रहता । कोई बड़ी उम्र की महिलाओं को निशाना बनाता । उसको यह मालुम था कि इंटरनेशनल फ्लाइट में आती ऐसी औरतें साथ में ज्वैलरी ले के ही आती हैं । उनकी बैग पर हाथ लगाने से थोड़ा बहुत माल तो मील ही जाता तो कभी जैकपोट भी लगता ।

कपूर अपने मरे हुए भाई के डॉक्यूमेंट्स का उपयोग करके उस नाम पर ही फ्लाईट की टिकट बुक कराता जिससे उसकी असली पहचान छिपी रहती । अगर एयरपोर्ट पर ही अच्छा माल जाए तो वो वॉशरूम में जाकर अपने कपड़े चेंज कर लेता जिसकी वजह से जिसका माल चोरी होता है वो जल्दी से उसको पहचान न सके । कपूर शादी के लिए जानेवाले यात्रियों को निशाना बनाकर बड़ी रकम का माल चूरा लेता ।

कपूर की पूरी कैरियर की बात करें तो चोरी का माल की कीमत की राशि का अंदाजा निकाले तो वो ३०० करोड़ का होने का पुलिस अफसरों का मानना है ।

कपूर की काले कारनामों की कुंडली की छानबीन अभी चालु और राम जाने और कितना बाहर आएगा ।

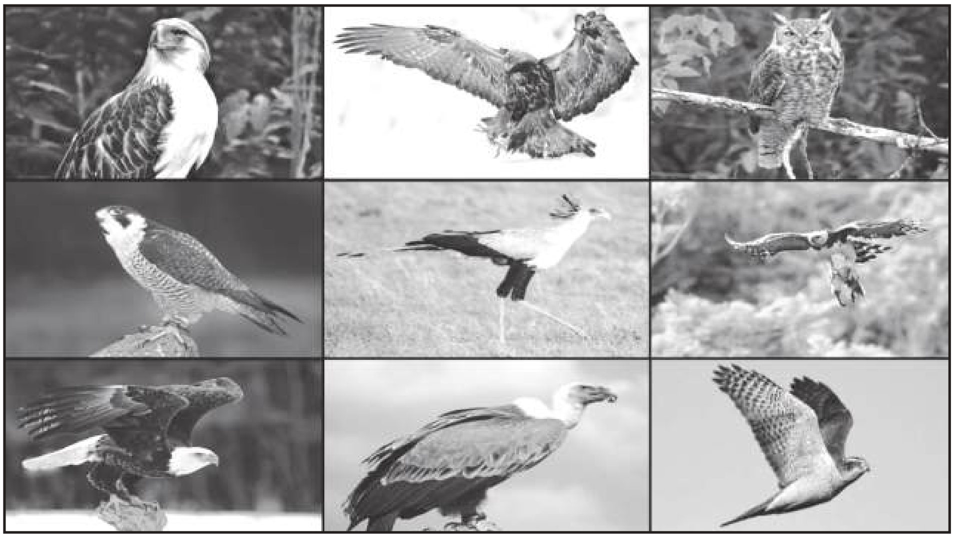

विश्व स्तर पे शिकारी पंछीओ की आबादी में भारी मात्रा में गिरावट

आज के आधुनिक समय में मानवी अपनी सवलतो के लिए नए नए आविष्कार करता रहता है। विश्व में बढ़ती आबादी की वजह से, नए नए बड़े बड़े उद्योगोंके निर्माण से, वाहनों की बढ़ती संख्यासे अनेको समस्या पैदा होती है। क्योंकि यह सब विकास के लिए मानवी को प्रकृति के खिलाफ जा के विकास करना पड़ता है। एक वास्तविकता यह भी है कि कोई भी एक्शन का रिएक्शन ज़रूर ही आता है।

मानवने अपने विकास के लिए प्रकृति के खिलाफ जा के जो कदम उठाए हैं, मानो के उसने अपने खुद के पैरों में कुल्हाड़ी मारी है। इसका नतीजा यह आया की, वैश्विक तापमान सरेराश तरीकेसे बढ़ता जा रहा है, क्योंकि पूरे विश्व में घने जंगलों को नष्ट किया जा रहा है, जमीन की कमी से मानवी अब मनस्वी रूप से जंगल को काटके अपना घर्रे बना रहा है, पर्यावरण में ज़हरीले केमिकल्स मील रहे हैं और कई शहर में तो सांस लेना भी मुश्किल हो गया है इतना वायु प्रदूषण बिगड़ गया है, रेत प्रदेशों में पहले जहां बारिश ही नहीं होती थी वहां अब नदियों में बाढ़ आ रही है, और जहां ज्यादा बारिश हो रही थी वहां अब कम बारिस होती है। मौसम का चक्र बिगड़ गया है। ठंडी की मौसम में गर्मी होती है, बारिश के टाइम गर्मी लगती है। कई बार तो ऐसा होता है सुबह, शाम और रात एक ही दिन में तीनों मौसम का अनुभव होता है। सुनामी,भूकंप,तूफान, जंगलों में बार बार आग लगती है ऐसी कई प्राकृतिक आपदा पैदा होती है।

आइसलैंड में बर्फ़ तेज गति से पिघल रहा है। जमीन कम होने से मानवी अब समंदर में भी घुस गया है और उसको भी डकार रहा है। ऐसा ही चलता रहा तो आनेवाले समय में विश्व का नाश होना तय है। वैसे भी पूरे विश्व में सब देश अपने को दुश्मन देश से सुरक्षित रखने के लिए और विश्व में अपना दबदबा कायम रखने के लिए यमराज समान भारे विध्वंशक शस्त्रों बना के पूरी दुनिया के विनाश की तैयारी कर ली है।

रेड एलर्ट

◆ लक्ष्मी विजयेता-अमदावाद ◆

इन सब की बूरी असर दुनिया के वन्य जीवन पर भी पड़ी है। पशु पक्षी की अनेकों प्रजातियां लुप्त हो गई है और कई और लुप्त होने की कगार पर है। आज हम यहां बात करेगें विश्व में कम होती जा रही और नष्ट हो रही पक्षीयो के बारे में।

अफ्रिका में पीछले ४० साल में शिकारी पक्षियों में करीबन ८८% की बहुत ही भारी मात्रा में कमी आने का एक नए संशोधन में नतीजा निकला है। इस संशोधन में ४२ प्रजातियो में से ३७ प्रजाति की आबादी में कमी आई है। जिसमें से ६९% वाली २९ प्रजातिओ में तीन पीढ़ी पर इस कमी देखी गई है। जे.आई.यू.सी.एन. के प्रमाण मुताबिक़ तय किया था। ''नेचर ईकोलॉजी एण्ड इवोल्यूशन जर्नल'' में प्रकाशित हुए संशोधन मुताबिक रेप्टर्स (शिकारी पक्षियों) की संख्या में कमी आने की मुख्यतः वजह वसवाट, शिकार की उपलब्धता और मानवीय दखलगिरीके नुक्शान की वजह से आबादी में तेजी से हो रहा है।

संशोधन में दर्शाया गया है कि, अफ्रिका खंड में मानव आबादी पीछले ६० सालों में तेजी से बढ़ी है। जिसके कारण जमीन के बदलाव समेत एक मुद्दे निवास की कमी पैदा हुई है।

शिकारी पक्षियों का वृद्धिदर भी ढीला होता

है। जिसमें भी खास करके जो उसकी आबादी कम हो जाए तब उस विस्तार के लिए खतरे की घंटी समान साबित हो सकता है। स्थानिक विस्तारो में जहां पशुओ की मृत्यु हुई है, वहां वे तुरंत ही उसका निकाल करते है और कुदरत के सफाई कर्मियों के रुप में कार्यरत रहते है। इसी वजह से बिमारिया फैलती नहीं है।

वृक्षारोपण सिर्फ़ 'हरियाली' नहीं है।

हमारे देश के ज्यादातर राज्यों के वन विभागो में पेड़ पौधे उगाना प्राथमिक गतिविधि है। हमारे देश की इस राष्ट्रिय वन नीति, आंतरराष्ट्रीय रिस्टोरेशन कमिटमेंट, ग्रीन इन्डिया मिशन जैसी केन्द्र सरकार की योजनाओ और फाइनेंस कमिशन के जरिए चल रहा है। देश के तय किए गए ३३% वन के लक्ष्यांक हासिल करने के लिए बहुत ही कठीन हालात पैदा हुए है, यह बात प्रथम वन नीति १९५२ में दर्शाया गया था।

२०११ के बोन चैलेंज तले २६ मिलियन हेक्टर के लक्ष्यांक को भारत ने २०३० तक हासिल करने का तय किया है। उस आधार को लेकर भी कई सवाल पैदा हो रहे हैं। ज्यादा वृक्षारोपण कर के घास के मैदानों और स्क्रब इकोसिस्टम के नुकसान के साथ जैव विविधता के समंदर विस्तार और पशुपालन समूहों के लिए चारेवाली जमीन की कमी उनकी कमाई पे असर डाल रही है।

हाल में ही '' नेचर जिओ साइंस जर्नल '' के अध्ययन में दर्शाया गया है कि, वृक्षारोपण की बढ़ोतरी के साथ ही वैश्विक स्तर पर कुछ नदी के तट विस्तारों में पानी की उपलब्धता में करीबन ३८% की कटौती आई है। इसी वजह से भारत के सूखे वन क्षेत्र में लाखों ग्रामीण समूहों की पानी की सुरक्षा को असर हो सकती है। बंजर जमीन और जंगलों को पुन:जीवित करना आवश्यक है, वृक्षारोपण सिर्फ़ अकेला पर्याय १००% नहीं है।

राष्ट्रिय वन नीति तले फोरेस्ट कवर को बढ़िया बनाना और घास के मैदानों और दूसरे इको सिस्टम्स के संरक्षण को बढ़ावा देना आवश्यक है। हर एक राज्य का अलग अलग लक्ष्यों के साथ उसका मोनिटरिंग भी उसी तरह होना चाहिए और उसके बाद ही लक्ष्यांक को तय किया जाए तो वो फलदायी साबित होगा।

उत्तर-पूर्वीय भारत में पंछियों की उर्ध्वगति

उत्तर –पूर्वीय भारत में पंछियों की जाति ने जंगलों को काटने और बढ़ते तापमान से उर्ध्वगति से स्थानांतर करना शुरु कर दिया है और उससे खतरा पैदा हुआ है ऐसा एक अध्ययन में बहार आया है।

'' इन्डियन इंस्टीट्यूट ओफ साइंस'' के संशोधको की टीम ने ढूंढ निकाला है कि, कम नमी और बढ़ता तापमान उसकी वजह है। ''ग्लोबल ईकोलोजी और इवोल्यूशन जर्नल'' में प्रकाशित एक संशोधन का नतीजा सामने आया है कि, छोटे कद के पंछियों उच्च तापमान को सहन करने की क्षमता की वजह से उधर ह रुक गए थे, कद में बड़े पंछियों ने स्थानांतर किया था। संशोधनकर्ताओ ने ये ढूंढ निकाला की, उच्चतर जंगलों में २।३ डिग्री सेल्सियस तापमान कम था और नमी १४।६% ज्यादा थी। बड़े कद के पंछियों की जरूरत यहां पे पूरी हो जाती है।

अरुणाचल प्रदेश के इगलनेस्ट वन्य प्राणी सेंचुरी में एक अध्ययन किया गया था। शीत प्रदेशों में आई हुई जगह पर समय बितने पर पंछियों के अस्तित्व दर में वृद्धि हुई थी, जबकि गर्मी वाली जगहों पर उसके अस्तित्व दर में कमी आई थी। क्लाइमेट चेंज होते ही यहां के पंछियों हालात को सानुकुल होने के लिए उर्ध्वगति से प्रयाण करते है और फिर वहीं स्थाई हो कर जिवन निर्वाह करते है।

संशोधनकर्ताओ ने यह भी चेतावनी दी है कि, अगर यह पंछियों उपर के जंगलों की ओर स्थानांतर करते समय वन अधोगति का सामना करेगें, तब यहां की कुछ प्रजातियां कदाचित स्थानीय तौर पे लुप्त हो जायेगी।

महासत्ता देश में भी कम हो रही है पंछियों की संख्या

अमरीका में ब्लैक मार्केट में गोल्डन ईगल और बोल्ड ईगल समेत ३,६०० पंछियो के शिकार की घटना सामने आते ही हाहाकार मच गया था। कोर्ट ने अरेस्ट वारंट जारी कर दिया है। यह घटना मोंटाना के ''फ्लैटहेड इन्डियन रिजर्वेशन'' विस्तार की है। जहां बोल्ड और गोल्डन ईगल्स समेत करीबन ३,६०० पंछियों का शिकार किया गया था। इस ईगल पंछियो को ब्लैक मार्केट में बेचने का आरोप लगाया है। ईगल या गरूड़ पंछी को आकर्षित करने के लिए मृत हिरन का उपयोग किया जाता था। यूनाइटेड स्टेट्स और दुसरे राज्यो में बड़ी राशि के लिए ईगल पंछीयो के पंख, पूंछ, पर और दूसरे अंगों को बेचने के लिए इस वारदात को अंजाम दिया गया था। मिसौला में यू। एस। डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में तय की गई तारीख को हाजीर होने में निष्फल होने के बाद मैजिस्ट्रेट जज केथलीन एल। डिसोटो ने मोन्टाना के सेंट इग्नेटियस के ४२ वर्षीय सिमोन पोल के लिए वारंट जारी किया था। यहां पर गौर करने वाली बात ये है कि, इस प्रकार की घटना सामने आने से अमरीका में पंछी प्रेमियों आग बबूला हो गए हैं और इस घटना की वजह से बहुत दुःखी भी हुए है। आंतरराष्ट्रीय स्तर पे वाइल्ड लाइफ ट्रैफिकिंग और हांटिंग वन्य जीव प्रजातियां के लिए लुप्त होने का सबसे बड़ा कारण है।

भारतीय सेनाएं और उसका इतिहास

राष्ट्र सुरक्षा

◆ राजेन कालरिया ◆

सैन्य बल किसी भी देश में शांति बनाए रखने के साथ साथ भूमि एवं समुद्री सीमाओं और हवाई क्षेत्र को सुरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत के सैन्य बलों को भारतीय सशस्त्र बल के नाम से जाना जाता है। इन्हें तीन भागो में विभाजित किया गया है। भारतीय थल सेना, भारतीय नौ सेना और भारतीय वायु सेना। इस लेख के माध्यम से हम भारतीय सेनाओं और उसके इतिहास के बारे में अवगत कराएंगे।

किसी भी देश की सुरक्षा में उसकी सेनाओं का अहम योगदान होता है। सेनाएं भूमि, जल और गगन में अपनी मौजूदगी से देश को सुरक्षित रखने का काम करती हैं।

भारत के राष्ट्रपति भारतीय सशस्त्र बलों के सर्वोच्च कमांडेंट है, जब की भारत में राष्ट्रीय रक्षा की जिम्मेदारी मंत्री मंडल के पास हैं, जिसका निर्वहन रक्षा मंत्रालय (MOD) के माध्यम से किया जाता हैं।

भारतीय सेना

भारतीय सेना की स्थापना १अप्रैल, १८९५ में की गई थी। इसका मुख्यालय राष्ट्रीय राजधानी में है। सैन्य इकाई सेना प्रमुख (COAS) के तले कार्य करता है। जो पूरी कमान, नियंत्रण और प्रशासन के लिए जिम्मेदार है। भारतीय सेना को ६ ऑपरेशनल और एक ट्रेनिंग कमांड में बांटा गया है। इनमें से प्रति कमांड का नेतृत्व लेफ्टिनेंट जनरल करता है। जिसे सेना उप प्रमुख (VCOAS) के बराबर का दर्जा प्राप्त है। १२,३७,००० से ज्यादा सक्रिय सैनिकों और ८०,००० से ज्यादा आरक्षित सैनिकों के साथ भारतीय सेना दुनिया की सबसे बड़ी स्थाई सेनाओं और सबसे बड़ी स्थाई वोलेंटियर सेना में से एक है। वर्तमान में जनरल मनोज पांडे भारतीय सेना के प्रमुख है।

भारतीय नौ सेना

आधुनिक भारतीय नौ सेना की नीव १७वी शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा रखी गई थीं, जो १९३४ मे रॉयल इंडियन नेवी मे बदल गए। भारतीय नौ सेना का मुख्यालय नई दिल्ली में है और यह नौ सेना स्टाफ प्रमुख (CNS) के अधीन कार्य करती है। भारतीय नौ सेना को तीन क्षेत्रीय कमांडो के तहत तैनात किया गया है, जिन में से प्रत्येक का नेतृत्व एक फ्लेग ऑफिसर करता है।

पश्चिमी नौ सेना कमान का मुख्यालय अरबसागर पर मुम्बई में है, दक्षिणी नौ सेना कमान का मुख्यालय कोच्चि (अरबसागर पर कोचीन) में है और पूर्वी नौ सेना कमान का मुख्यालय बंगाल की खाड़ी पर विशाखापट्टनम में है। भारतीय नौ सेना ५८,३५० पुरुषो और महिलाओं के साथ दुनियां की सबसे बड़ी नौ सेना बलों में से एक है। वर्तमान में एडमिरल आर। हरिकुमार भारतीय नौ सेना के प्रमुख है।

भारतीय वायु सेना

भारतीय वायु सेना की स्थापना ८ अक्टूबर, १९३२ को ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान की गई थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इसकी सेवाओं को देखते हुए १९४५ मे इस के नाम में रॉयल शब्द को जोड़ा गया था। भारतीय स्वतन्त्रता के बाद १९५० में इस के नाम से रॉयल शब्द हटा दिया गया था। तब से भारतीय वायुसेना में बड़े पैमाने पर बदलाव हुए हैं, जिन में शॉर्ट सर्विस कमिशन के लिए महिलाओं को शामिल करना भी शामिल है। भारतीय वायु सेना का नेतृत्व वर्तमान में वायु सेना प्रमुख विवेकराम चौधरी कर रहे है।

कांगड़ा यहां चौड़ी छाती वीरों की...

भारतीय सेना में पूरे देश में से शामिल होके वीर जवानों अपनी फर्ज पूरी निष्ठा से बखूबी निभा रहे है। फिर वो पंजाब हो, आसाम हो, यूपी हो, बिहार हो, राजस्थान हो, महाराष्ट्र हो, उत्तराखंड हो, जम्मु कस्मीर हो, झारखंड हो, गुजरात हो, और ऐसे हमारे देश के सब राज्यो के वीर जवानों अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते है।

आज हम बात करेंगे ऐसे ही हमारे देश के राज्य हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा की मिट्टी की जहां से आए कई वीर जवानों ने सेना में अप्रतिम साहस और शौर्य दिखा के अपने गांव, वतन के साथ हमारे देश के लिए गर्व की गाथाएं लिखी है और इन सब बातें जान के हमारी छाती भी गर्व से फुल जाती है और मुंह में से अनायास ही निकल जाता है, '' वाह, हमारे शेर वाह...'' । धन्य हो तुम्हारे माता पिता और उस मिट्टी को जहां आपने जन्म लिया।''

२०वी सदी में हमारे एक मित्र लेखक ने अहमदाबाद की ब्रिटिश लाइब्रेरी की मुलाकात ली थी। जहां उसने पंजाब और कांगड़ा क्षेत्र के इतिहास को उजागर करनेवाले कुछ ब्रिटीश हिन्द काल की किताबें मिली। और उसने हमें बताया के, कांगड़ा का इतिहास ११ वीं सदी से है जब कटोच वंशीय क्षत्रिय राजा का राज था। मूलरूप से राजपूत जाति के वो क्षत्रियों warrior race/योद्धावंशी थे, इसलिए वीरता उनके खून में थी। ११ वीं सदी से लेके १८ वीं सदी दौरान महमूद गजनवी, फिरोज शाह तघलख, मुहम्मद बीन तघलख, मुगल बादशाह अकबर, जहांगीर जैसे विदेशी दुश्मनों के साथ लड़ते हुए कांगड़ा के क्षत्रिय योद्धाओं ने अपनी भूमि को अपने खून से सींचा था। और यह बात तो सहज है की ऐसी वीर भूमी में ही शूरवीर योद्धा पैदा होते हैं।

अनसंग हिरो

◆ एन.जी.सुथार-गांधीनगर ◆

दोस्तों, आज हम यहां पर बात करेंगें इस वीर भूमी कांगड़ा से आते और हमारे देश की सेना में शामिल होकर जिसने ना सिर्फ़ अपने परिवार, अपने वतन के साथ अपने देश के १४० करोड़ हिन्दुस्तानियों का शीना गर्व से चौड़ा कर दिया है ऐसे कुछ वीर जवानों की।

भारतीय सेना में पूरे देश में से शामिल होके वीर जवानों अपनी फर्ज पूरी निष्ठा से बखूबी निभा रहे है । फिर वो पंजाब हो, आसाम हो, यूपी हो, बिहार हो, राजस्थान हो, महाराष्ट्र हो, उत्तराखंड हो, जम्मु कस्मीर हो, झारखंड हो, गुजरात हो, और ऐसे हमारे देश के सब राज्यो के वीर जवानों अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते है ।

परमवीर मेजर सोमनाथ शर्मा :

कांगड़ा ने भारतीय सेना को जो सेंकड़ों योद्धाएं दिए है उस लिस्ट में सबसे अव्वल पर जिसका नाम आता है, भारत के पहले परमवीर चक्र विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा का। (मेजर सोमनाथ के छोटे भाई जनरल विश्वनाथ शर्मा भारतीय खुश्कीदल के प्रमुख सेनापति के पद पर फर्ज बजा चूके है ।) १९४७ के युद्ध में पकिस्तान के साथ हुए युद्ध में कश्मीर के बड़गाम मोर्चे पर मेजर शर्मा के पास शस्त्रों और जवानों की कम उपलब्धियों के साथ दुश्मनों के साथ लड़े थे और और अंतिम गोली और अपने खून के अंतिम कतरे तक वो लड़ते रहे आखिरकार दुश्मनों की गोली शीने पे खाकर वे वीरगति को प्राप्त हुए, लेकिन उसका बलिदान निष्फल नहीं गया। उसकी वीरता अप्रतिम शौर्य को लेकर बड़गांव के पास की एक मात्र हवाईपट्टी दुश्मनों के हाथ में जाने से बच गई। मेजर सोमनाथ की चौथी कुमाऊ बटालियन के सिर्फ़ ९० वीरों ने पाकिस्तान के ७०० हमलावरों के साथ लड़ाई लड़ते हुए उनमें से ३०० को मौत के घाट उतार दिया। श्रीनगर समेत ज्यादातर कश्मीर का प्रदेश दुश्मन के हाथों में जाते हुए बचा लिया और उनके मनसूबो पर पानी फिर दिया।

लेफ्टिनेंट कर्नल शेर जंग थापा

कांगड़ा की मिट्टी से पैदा हुए दूसरे सपूत लेफ्टिनेंट कर्नल शेर जंग थापा भी ने भी कश्मीर युद्ध में अपने अप्रतिम शौर्य और साहस का परिचय दीया था। फ़रवरी ११, १९४८ के दिन पाकिस्तानी सेना ने जब स्कर्दु पर हमला बोला तब वो दिवार की तरह डटे

रहे थे। स्कर्दु नगर बाल्टिस्तान की राजधानी था और लद्दाख में दाखिल होने का प्रवेशद्वार भी। इसलिए उसको हासिल करने के लिए लेफ्टिनेंट कर्नल अस्लम खान की अगवाई में पाकिस्तानी सेना के करीबन १२०० सशस्त्र सैनिको ने हमला कर दिया था। इतने सारे सशस्त्र दुश्मनों के साथ लड़ने लिए मालूम है कितनी संख्या थी ? सिर्फ़ ७९ । और यह नन्ही सी पल्टन के लीडर थे लेफ्टिनेंट कर्नल शेर जंग थापा।

फ़रवरी ११ के दिन १२०० सशस्त्र दुश्मनों के साथ हमारे सिर्फ़ ७९ नरबंकाओ ने मुकाबला किया। यह तो एकतरफी मुकाबला हो गया और यह लड़ाई कितने घंटे या दिनों में पूरी हो जानी चाहिए लेकिन आप मानेंगे नहीं लेकिन यह एक हकीकत है की, ११, फ़रवरी को शुरू हुई लड़ाई का अंत हुआ १४वीं अगस्त को?मतलब पूरे ६ महीना और ३ दिन में। इस लम्बे समय के दौरान लेफ्टिनेंट कर्नल शेर जंग थापा और उनके वीर जवानों ने दुश्मनों के असंख्य हमला निष्फल बनाए । हमारे वीर जवानों की हिम्मत और साहस तो कम होनेवाले नहीं थे, लेकीन उनके खाने पीने का सामान और शस्त्रों ख़त्म हो गए।

भारत के लश्करी इतिहास में शौर्य का बेजोड़ अध्याय लिखकर टुकड़ी के सभी वीर जवानों ने वीरगति प्राप्त की। लेफ्टिनेंट कर्नल शेर जंग थापा दुश्मनों के हाथ युद्ध कैदी के रुप में जिन्दा गिरफ्तार हुए। करीबन एक साल पाकिस्तानी जेल में रहने के बाद उसको छोड़ा गया और वो भारत वापिस आए तब उसको हमारी सेना ने उसे नवाझा।

केप्टन सौरभ कालिया

भारत -पकिस्तान के बीच हिम पहाड़ों में लड़ी गई लड़ाई में कांगड़ा के तीन वीर जवानों का नाम लम्बे समय तक सुर्खियो में रहा। इस में से एक वीर योध्धा थे कैप्टन सौरभ कालिया !

भारतीय सेना की चौथी जाट बटालियन में कैप्टन सौरभ कालिया ३१ दिसंबर, १९९८ के दिन शामिल हुए थे। सेना में शामिल होने होने के बाद सिर्फ़ ६ महीने में उसने देश की खातिर अपने प्राण की आहुति दे दी। हुआ ऐसा था कि, नवम्बर, १९९८ के ठंडी की मौसम में पाकिस्तानी सैनिकों के साथ उसके भाडूती घूसन खोरों ने अपने कश्मीर के कारगिल, द्रास और बतालिक जैसे पहाड़ीक्षेत्र में ख़ाली हुई भारतीय चौकीओ को सीमेंट के मजबूत बंकरो शस्त्रों और खुराकी का जंगी जत्था जमा करना शुरु कर दिया था। भारत ने इस घूसनखोरी का समाचार एक स्थानिक चरवाहे के जरिए मिला था, लेकिन हमारे लश्करी अफसरों ने उसको गलती से त्रासवादी मानके बड़ी गलती कर दी। ठंडी की मौसम पूरी होने के बाद मई १५, १९९९ के दिन हमारे खुशकीदल की चौथी जाट बटालियन के कैप्टन सौरभ कालिया उनके पांच साथी जवानों के साथ काकसर में १७,००० फीट ऊंचे शिखर पर की बजरंग नामकी चौकी का चार्ज लेने के लिए रवाना हुए।

जैसे ही वो बजरंग चौकी पास पहुंचे की अचानक से पहाड़ों में छिपे हुऐ पाकिस्तानी घुशनखोरो ने मशीन गन से गोलीबारी शुरू कर दी। उसके जवाब में सौरभ कालिया और उनके साथीयों ने भी मोर्चा सम्हाल के गोलीबारी शुरू कर दी लेकिन ऊंचे पहाड़ों के पीछे और बंकरो में छिपे हुए दुश्मनों का मुकाबला करना बहुत ही कठीन था। फिर भी कैप्टन सौरभ कालिया ने ना पिछेहठ की। पूरे जोश और साहस से डट के मुक़ाबला किया। आखिरकार चौथी जाट बटालियन के सभी ६ शूरवीर के कारतूस खत्म हो गए और दुश्मनों ने उसे चारों ओर से घेर कर युद्धबंदी बना लिया।

युद्ध समय दौरान कोई शत्रु सैनिक को जिन्दा गिरफतार किया जाता हैं तो उसके साथ लश्करी शिस्त और रसमो के साथ व्यवहार करना पड़ता है ऐसा जिनीवा कन्वेंशन नामनी आंतरराष्ट्रीय समझौता अमल मे है। सभी देशों का उसका पालन करना पड़ता है। लेकिन पाकिस्तान ने इस समजूतीके साथ मानवता की भी ऐसी तैसी कर दी। युद्धकैदी के तौर पे गिरफतार हुए कैप्टन सौरभ कालिया पर करीबन एक महीने तक थर्ड डिग्री टॉर्चर किया।

यही वो मिट्टी है जहां से सेंकड़ों वीर जवानों भारतीय सेना में शामिल होकर अपने वतन और अपने देश का नाम रोशन कर रहे है। अगर आप कांगड़ा जाओ तो जरूर से हमारे वीर शहीद जवानों के निवास स्थान जाना और एक गर्व पूर्वक की सेल्यूट कम श्रद्धांजलि देना।

हद तो तब हुई जब पाकिस्तानी सेना ने कैप्टन कालिया का पार्थिव देह भारत को सुप्रत किया, सेना में सब एकदम हैरान हो गए। क्योंकि पाकिस्तानी जल्लादों ने थर्ड डिग्री टॉर्चर की सब सीमाएं लांघ कर कालिया के बदन को पूरी तरह से बिखेर दिया था। पोस्ट मॉर्टम के रिपोर्ट में जो आया वो वो बात आप जानेंगे तो आप की आंखों में आंसू आ जायेंगे और पाकिस्तान नाम सुनते ही आपका ख़ून खोल उठेगा। तो अब जानिए कैप्टन कालिया के साथ कैसा पाशविता के साथ अत्याचार किया गया था।

कैप्टन सौरभ कालिया के शरीर पे अनेकों जगह पर जलने से होते काले दाग़ मौजूद थे, इसका सीधा मतलब होता है कि, टॉर्चर के दौरान उनको जलती हुई सिगरेट से शरीर को जला दिया था। कान का पर्दा चीरा हुआ था,

क्योंकि उनके कान में गर्म लोहे का रोड़ डाला गया था। मुंह में से कई दांत गायब थे, जबकि हाथ –पैर, खोपड़ी में एनगीनत फ्रेक्चर हुए थे। कैप्टन कालिया का नाक काट लिया गया था और आंखों के डोरे को चप्पू से बाहर निकाला गया था। और कई प्रकार के अधम कक्षा के पशुताभरे अत्याचार उन पर किया गया था जिसको हम यहां पर मर्यादा और भाषा के संयम साथ लिख भी नहीं सकते।

सिर्फ राष्ट्रीय ही नहीं, आंतरराष्ट्रीय स्तर पे पाकिस्तान के इस पाशविता वाले करतूतों की निंदा हुए। जिनीवा कन्वेंशन की अवहेलना करके दुश्मन ने कैप्टन कालिया के साथ किया हुआ अत्याचार के सामने गुस्से हुए कैप्टन सौरभ के पिता नरेन्द्र कालिया ने पाकिस्तान सेना का माफीनामा के लिए भारत सरकार को अपील की। पूरा मामला संयुक्त राष्ट्र संस्था के पास पहुंचा, लेकिन कुछ हुआ नहीं। लेकिन हार ना मानकर नरेन्द्र कालिया ने इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस से अपने दिवंगत पुत्र को न्याय दिलाने के लिए सप्तम्बर, २०१४ में उन्होंने Public Interest Litigation में जन याचिका दाखिल की। आप नहीं मानेंगे, लेकिन इस कोर्ट उनकी अपील को गैरकानूनी बताया।

कारगिल के पहाड़ों में दुश्मनों का मुकाबला करके उसके ही दोजख में अनेकों अमानवीय अत्याचार सहन करके देश के लिए बलिदान देनेवाले वीर जवान के अपमान का कड़वा घूंट पीकर बाद में नरेन्द्र कालिया थक गए। आज भी कांगड़ा के पालमपुर नगर में उन्होंने अपने निवास स्थान का एक कमरा शहीद कैप्टन सौरभ कालिया की यादगिरी के तौर पर अलग रखा है। पालमपुर की मुलाकात पे आते कोई कोई पर्यटक नरेन्द्र कालिया की अनुमति ले कर यह कमरे की मुलाकात लेते है।

परमवीर कैप्टन विक्रम बत्रा

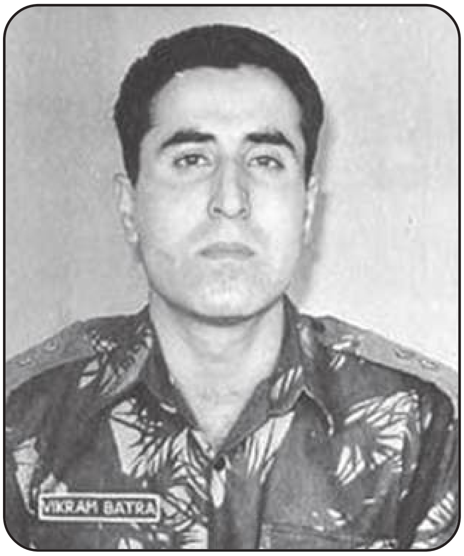

पालमपुर (कांगड़ा) के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ एक और नाम है, कैप्टन विक्रम बत्रा। कारगिल युद्ध में लड़ते समय अप्रतिम शौर्य बदल ''परम वीर चक्र'' विजेता और युद्ध मैदान में ''शेरशाह'' के उपनाम से पहेचाने जाते कैप्टन विक्रम बत्रा का घर भी पालनपुर में है, जहां उनके पिता रहते है। (कैप्टन बत्रा के मातुश्री का फ़रवरी, २०२४ में निधन हुआ था।) पिता गिरधारी लाल बत्रा ने परमवीर पुत्र की याद में घर में एक ख़ास कमरा बनाया है। इस कमरे में कैप्टन बत्रा की तस्वीरें, मेडल्स, सम्मानपत्र, युनिफॉर्म रखे गए है।

मेजर सुधीर वालिया

कारगिल युद्ध में दुश्मनों के साथ शौर्य के साथ लड़नेवाले पालमपुर के रहनेवाले योद्धा मेजर सुधीर वालिया भी थे। भारतीय सेना की कसी हुई पेरा ९ नामक स्पेश्यल फोर्सिस टीम के सदस्य मेजर सुधीर वालिया ने मश्कोह खाई सेक्टर में आए हुए ७०,००० फीट ऊंचे झुलू टॉप को कब्जे में लेने का मिशन इंपोसिबल मिला था, जो उन्हों ने कर दिखाया था। कारगिल युद्ध के बाद उनको जम्मु –कश्मीर में जिम्मेवारी दी गई थी, जहां अगस्त, १९९९ में कुपवाड़ा तहसील में हुए एक आतंकवादी हमले में वे शहीद हो गए। अप्रतिम वीरता के लिए मेजर सुधीर वालिया को मरणोतर अशोक चक्र से सम्मानित किया गया।

यही वो मिट्टी है जहां से सेंकड़ों वीर जवानों भारतीय सेना में शामिल होकर अपने वतन और अपने देश का नाम रोशन कर रहे है। अगर आप कांगड़ा जाओ तो जरूर से हमारे वीर शहीद जवानों के निवास स्थान जाना और एक गर्व पूर्वक की सेल्यूट कम श्रद्धांजलि देना। वैसे तो तहसील से जिसका नाम रखा गया वो कांगड़ा नगर का किल्ला भी देखने लायक है, क्योंकि विदेशी हमलों और समय की दीवार बनके खड़ा है जो कांगड़ा के शौर्य का मूक प्रतीक है। यहां के पर्यटन से हमारी भावी पीढ़ी को ज्ञान के साथ हमारे असली हीरों के शौर्य से परिचय भी हो जाएगा तो वे भी अपने जीवन में ऐसे विरो को सम्मान देना सीखेंगे।

ऑस्ट्रेलिया में अनेक जगह पर बार-बार मिलते प्रेतात्मा के पर्चे

डरावनी दुनिया

◆ सतीष सोलंकी-राजकोट ◆

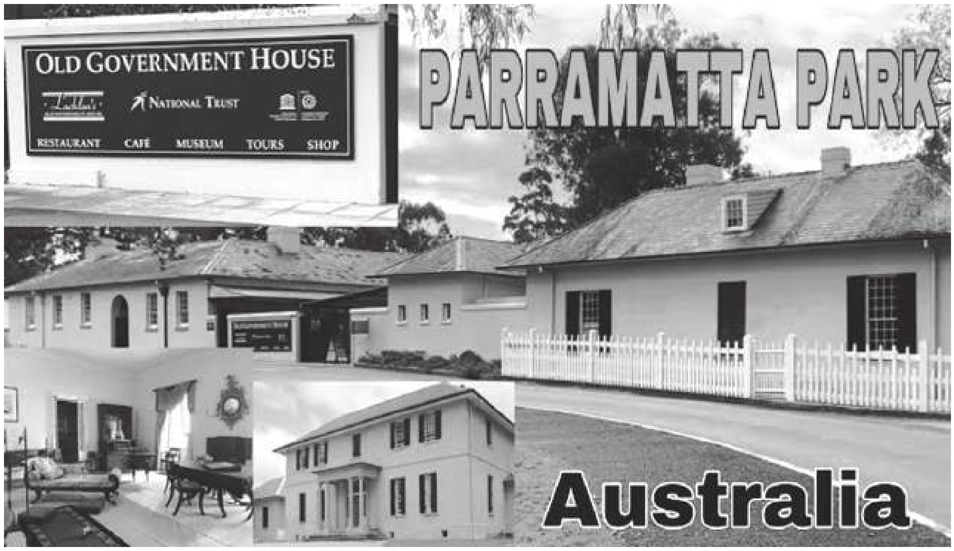

दोस्तों पूरे विश्व में हर एक देश और समाज में मौत के बाद की लोक की बातों के बारे में अनेकों मान्यताओं और तार्किक बातें प्रचलित है। आज के आधुनिक युग में भी मनुष्य अभी भी प्रेतलोक या अलौकिक दुनिया के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहता है। इस विषय में दुनिया में अलग-अलग लोगों द्धारा अलग-अलग बातें सुनने को मिलती है। आप आम आदमी से इस बारे में पूछेंगे तो वह कहेगा कुछतो है, लेकिन क्या है वह मालूम नहीं। बुद्धिजीवी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले लोगों ऐसी बातों को हास्यास्पद और तथ्यहीन मानते हैं

हमारे शास्त्रों और धर्मग्रंथों में भी ऐसा उल्लेख है कि मृत्यु के समय किसी आदमी की इच्छाए अधूरी रह जाने की वजह से वह प्रेत योनि में जन्म लेता है। वैसे देखा जाए तो हमारी देसी भाषा में हम भूत शब्द सुनते ही भूत, प्रेत, डायन, चुड़ैल जैसे नाम और उनके काल्पनिक डरावने चेहरे और रूप हमारी आंखों के सामने आते हैं। हमारे देश में भी ग्रामीण इलाके और अशिक्षित समाज में आज की तारीख में भी इस विषय पे ज्यादा अंधश्रद्धा या डर देखने को मिलते हैं और बाद में शुरू होती है तंत्र मंत्र, धागे और तावीज की दुनिया।

हम भी जब बार-बार ऐसी भूत प्रेत की बातें सुनते हैं तो हम भी एक बार तो जरूर सच में पड़ जाते हैं कि क्या सच में ऐसा होता है। सामान्यतः और आम आदमी के दृष्टिकोण से देखे तो ऐसा कहा जाता है कि, इस दुनिया में तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं जैसे कि एक प्रकार के मनुष्य को नहीं तो भूत-प्रेत का अनुभव होता है, ना वह इसके बारे में कुछ जानते हैं। इसलिए ऐसे लोग मानते हैं कि वह भूत प्रेत की बात तो काल्पनिक और तथ्यहीन है। जबकि दूसरे प्रकार के मनुष्य से भूत प्रेत का सामना होता है लेकिन उस में कुछ अनुभव नहीं होता इसलिए ऐसे लोग कहते हैं कि, हां भूत प्रेत है तो सही लेकिन वह हमें कुछ नुकसान नहीं करते। लेकिन तीसरे प्रकार के मनुष्य को इसके बारे में कटु अनुभव होता है। ऐसे लोगों को भूत-प्रेत का आभास भी होता है और उससे परेशान भी होते हैं। ऐसे लोगों के दृष्टिकोण से देखे तो भूत-प्रेत का अस्तित्व है और वह बहुत ही खतरनाक होते हैं। उससे दूर रहना ही अच्छा है। ऐसी बाबतों में कोई खास सबूत नहीं मिलते लेकिन ऐसी मान्यताए समाज में सुनी जाती है।

यह अलौकिक दुनिया के बारे में पूरी दुनिया में कई वैज्ञानिको ने गेहरा अध्ययन करने के बाद आधुनिक संसाधनों की खोज करके उसके बारे में सच्चाई जानने का प्रयास किया है। लेकिन उसमें अलग-अलग विचारों देखने के मिलते हैं। भूत प्रेत की काल्पनिक बातों को लेकर अनेक फिल्म बन चुकी है और नवल कथाएं भी लिखी जा चुकी है।

हमारे इस आधुनिक युग में भी ऐसी कई चित्र विचित्र घटनाएं बनती रहती हैं जो हमें सोचने पर मजबूर कर देती है कि ऐसा कुछ

तो है जो अलौकिक और रहस्यमयी है।

आज हम बात करेंगे ऑस्ट्रेलिया की, जहां पर अनेक जगहों पर ऐसी घटनाए बनी है। इस आर्टिकल से हम किसी प्रकार की अंधश्रद्धा का अनुमोदन नहीं करते हैं और नहीं ऐसी बातों को बढ़ावा देते हैं। लेकिन हमारे इस आर्टिकल में जो विश्व में ऐसी चित्र विचित्र घटनाएं बनती है इसके बारे में लोगों को बताना है। सिर्फ इसी वजह से यह आर्टिकल बनाया गया है।

ऑस्ट्रेलिया में सबसे पुराने बिल्डिंग परामाता पार्क (Parramatta Park) स्थित ओल्ड गवर्नमेंट हाउस नाम से प्रचलित प्राचीन भूतिया आवास है, जहां पर अनेक भूत प्रेतो रहते हैं ऐसा वहां के लोगों का मानना है। सेंट्रल सिडनी से करीबन १ घंटे की सफर की दूरी पर आए इस इमारत सदियों पहले वहां के गवर्नर हाउस में रूप में जानी जाती थी।

इसका निर्माण १७९९ में से १८१६ दौरान हटर और मेक्कारी नाम के गवर्नरो ने किया था। इस इमारत में होती भूत प्रेत की घटनाएं इतनी प्रसिद्ध हो गई की सरकार ने इस इमारत को मूल रूप में बने रहने के लिए उसका जो भी निभाव खर्च है वह भुगतने तय किया है। इस इमारत को हेरीटेज हाउस के नाम से डेवलप किया गया है। आप नहीं मानेंगे लेकिन हर शुक्रवार रात्रि को इस इमारत को मुलाकातियों के लिए पर्यटन के लिए खुला रखा जाता है और कोई मुलाकाती को प्रेतात्मा सामना हो जाता है। एक बार एक कर्मचारी इस इमारत के एक कक्ष की सफाई कर रहा था तब उसको धुंधले प्रकाश में खिड़की के अंदर एक प्रेत का चेहरा देखने को मिला था। उसने ध्यान से देखा था तो वह चेहरा हवा में लटक रहा था। उसका शरीर नहीं था। बाद में उसकी दूसरी खिड़की में भी वही हवा में लटकता चेहरा देखने को मिला जिसका शरीर नहीं था।

यहां आया हुआ ब्लू रूम इस इमारत में होती प्रेत घटनाओं का मुख्य केंद्र बिंदु है। नाम के अनुसार ही वह पूरा कक्ष का कलर ब्लू है। इस कक्ष का बीते हुए समय में इस इमारत का

यह अलौकिक दुनिया के बारे में पूरी दुनिया में कई वैज्ञानिको ने गेहरा अध्ययन करने के बाद आधुनिक संसाधनों की खोज करके उसके बारे में सच्चाई जानने का प्रयास किया है। लेकिन उसमें अलग-अलग विचारों देखने के मिलते हैं। भूत प्रेत की काल्पनिक बातों को लेकर अनेक फिल्म बन चुकी है और नवल कथाएं भी लिखी जा चुकी है।

मुख्य शयनखंड के तौर पे उपयोग में लिया जाता था। इस कक्ष में पुराने काल की शैली का पलंग और अलमारी भी है। जिसमें कुछ चीज रखी गई है। इस शयनखंड के साथ एक सुंदर लडकी जुड़ी हुई है, जिसको ब्ल्यू लेडी के नाम से जाना जाता है। इस ब्लू लेडी बार-बार यहां पर भटकते हुए और पलंग पर बैठी हुई नजर आती है। इस सुंदर ब्लू लेडी की तस्वीर भी उस ब्लू रूम के पास की दीवाल में लगाई गई है। उस सुंदर लड़की ने ब्लू कलर के कपड़े पहने हुए हैं और उसकी गोद में उसका प्रिय डोगी बैठा हुआ है। ऐसा जानने को मिलता है की इस सुंदर लडकी का नाम मेरी ब्लिघ (Marry Bligh) था। इस ब्ल्यू रूम में बार-बार प्रेतात्मा के उपद्रव की घटनाएं बनती है। इस शयनखंड में रखी हुई अलमारी अपने आप खुल जाती है और अंदर रखी हुई सब चीज हवा में लटकती नजर आती है। इस शयनखंड के बाहर से ताला लगा हुआ होता है, तब अभी अंदर से चित्र विचित्र प्रकार की आवाज आती है। जब दरवाजा खोल के अंदर देखते हैं तो सब चीज इधर-उधर जमीन पर बिखरी हुई मिलती है। इस कक्ष में लाइट चालू हो तो बंद हो जाती है , बंद हो तो अपने आप चालू हो जाती है। कक्ष के अंदर से रोना, हंसना और बातें होने की आवाजे आती है। यहां पर देखभाल करने वाले को ब्ल्यू रूम में पलंग पर अपने पेर पसार के मेरी ब्लिघ आराम करती देखी गई थी। उसने बिना घबराए उसके साथ बातचीत की थी, लेकिन अचानक से उसको बुखार आ गया और बीमार हो गया था। थोड़े दिनों में ही उसकी मौत हो गई थी। एक बार तो एक अचंबित करने वाली घटना भी बनी थी। एक दिन एक गाइड उस कक्ष में हाजिर सब मुलाकातिओ को उसके बारे में बता रहा था तबअचानक ब्लू लेडी वहां प्रेतात्मा रूप से प्रकट हुई थी और सब के बीच में एक चक्कर काट के हवा में गायब हो गई थी।

इस ओल्ड गवर्नर हाउस ऑस्ट्रेलिया की वह प्रथम जगह है जहां यूएफओ और दूसरे ग्रह के लोगों को देखा गया था। साल१८०० के शुरुआती सालों में इस इमारत के पास उड़न खटोला जैसी कमान जैसे आकार का एक वाहन वहां पे एक काम करने वाले आदमी ने देखा था। इस वाहन में उन लोगों ने इस कर्मचारी को अगवा कर लिया था, बाद में इस ही खेत में ईसी कर्मचारी मूर्छित स्थिति में पाया गया मिला था।

इस ओल्ड गवर्नर हाउस ऑस्ट्रेलिया की वह प्रथम जगह है जहां यूएफओ और दूसरे ग्रह के लोगों को देखा गया था। साल१८०० के शुरुआती सालों में इस इमारत के पास उड़न खटोला जैसी कमान जैसे आकार का एक वाहन वहां पे एक काम करने वाले आदमी ने देखा था। इस वाहन में उन लोगों ने इस कर्मचारी को अगवा कर लिया था, बाद में इस ही खेत में ईसी कर्मचारी मूर्छित स्थिति में पाया गया मिला था। अचंबित करने वाली बात तो यह है कि उस समय में हवाई जहाज की खोज भी नहीं हुई थी इसलिए उस कर्मचारी ऐसी विचित्र रूप की हवाई जहाज जैसी गोलाकार उड़न खटोला देख के अचबित रह गया था।

ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न शहर का द प्रिंसेस थियेटर परिचय कला संस्कृति का प्रसिद्ध स्थल है। वहां ३ मार्च, १९८८ के दिन प्रख्यात ब्रिटीश ओपेरा सिंगर और अभिनेता फेडरीक फेडीरिसी (Fredrick Fedrici) मेफिस्टो फेलीस का अभिनय कर रहा था, तब सिर्फ ३७ साल की आयु में ही हार्ट अटैक से उसकी मौत हुई थी। इस थिएटर में उसका प्रेतात्मा कई अभिनेताओं को बार-बार देखने को मिला है। जब भी उसका प्रेतात्मा थिएटर में आता है तब वहां लाइट अपने आप ही चालू बंद होने लगती है। उसके आवाज में ही उनके गीतों की पंक्तियां सुनाई देती है। उसका प्रेतात्मा ज्यादातर रात्रि को ही दिखाई देता है और वह थिएटर के ड्रेस सर्कल की बीच के आसपास के दूसरी या तीसरी सीट पर ही बैठता है। कभी कभी वो ड्रामा के विवेचको के चेहरे देखने के लिए अपनी सीट बदलता रहता है। अगर कोई ड्रामा या कंसर्ट में कोई अभिनेता का अभिनय सही नहीं होने से वह अपने भंवर चढा के ना खुशी दिखाता नजर आता है। द प्रिंसेस प्रिंस थिएटर के मालिक हमेशा कोई भी ड्रामा की ओपनिंग रात्रि को ड्रेस सर्कल की दूसरी सीट खाली ही रखते हैं।

ऑस्ट्रेलिया की नॉर्थ क्वींसलैंड में आया बेबिन्दा बुल्डर्स (Babinda Bulders) ना

मक छोटे तालाब को डेविल्स पूल्स (Devils Pools) से जाना जाता है। यह सुंदर नयन मनोहर झरने के पानी से तालाब का स्वरूप लेता है। इस कुदरती सौंदर्य से भरपूर ऐसे स्थल को डेविल्स पुल कहने की भी एक खास वजह है। उलाना (Oolana) नाम की एक सुंदर लड़की का प्रेतात्मा उस जल में स्नान करते देखा जाता है। उलाना को जिसके साथ सच्चा प्यार था उसके साथ उसकी शादी नहीं होने देने से उसने इस तालाब में कूद कर आत्महत्या कर ली थी। कई लोगों ने उलाला को ईसी तालाब में तैरती हुई देखी है। उसके साथ स्नान करने के लिए कई लोगों इस तालाब में उसके साथ स्नान करने के लिए कूदे है लेकिन उन सब लोगों की रहस्यमई रूप से मौत हो गई थी। इस तरह इस सुंदर लडकी के साथ स्नान करने की लालसा में करीबन पिछले ७० सालों में लगभग १७ लोगों ने अपनी जान गवाई है। इसलिए ऐसी मौत वालों की कब्र पर लिखने को आता है, (He came for a visit and stayed for ever ...) मतलब वह मुलाकात पर आया था और स्थाई तरीके से रह गया।

दोस्तों ऐसी तो कई घटनाएं हैं जो विश्व में अलग-अलग जगह पर बनती है लेकिन उसके बारे में हम फिर कभी बात करेंगे।

इसलिए ऐसी मौत वालों की कब्र पर लिखने को आता है, (He came for a visit and stayed for ever...) मतलब वह मुलाकात पर आया था और स्थाई तरीके से रह गया।

थकान: समस्या और उपाय

स्वास्थ्य

◆ योगेन्द्र पंड्या ◆

आज की भागदौड़वाली जिंदगी ने मानवी को यन्त्र बना दिया है। उनकी जिन्दगी यंत्रवत तौर पे ही चल रही है। अत्याधुनिक संशोधनों ने मानवी की सवलते आसान कर के जीवन की लाइफ स्टाईल एकदम से हाईफाई बना दी है। मानवी के जीवन धोरण में भी सुधार आया है अब वो पहले से अच्छी तरह से जिंदगी जी रहा है। लेकिन यह भागदौड़वाली जिंदगी ने मानवी का सुख चैन छीन लिया है। अपने परिवार के अच्छे तरीके से पालन और उनकी ख्वाहिशों पूरी करने के लिए लगातार दौड़ता रहता है। इसी वजह से वो सही तरह से अपनी सेहत का ख्याल नहीं रख सकता और शारीरिक और मानसिक रूप से थकान महसूस करता है और उसका स्वास्थ्य लड़खड़ा जाता है।

आज हम बात करेंगे इस थकान, उसकी समस्या और उसके उपाय की।

लगातार थकान महसूस करना वो एक सार्वत्रिक रूप की शिकायत है। पूरी दुनिया में लाखों लोगों यह समस्या से पीड़ित है। इस में व्यक्ति को शरीर में ऊर्जा की कमी लगती है जिसकी सीधी असर उसके दैनिक जीवन, कार्य और सुख चैन पर होती है। थकान एक ऐसी समस्या है जो अलग अलग कारणों के संयुक्त असर से पैदा होती है।

थकान की वजह :

लाईफ स्टाइल: नींद की कमी, अयोग्य खुराक, व्यायाम न करना, ज्यादा मात्रा में केफिन या शराब का सेवन और क्रोनिक स्ट्रेस जैसे लाइफ स्टाइल को असरकर्ता परिबलो की वजह से व्यक्ति थकान महसूस कर सकता है।

दाक्तरी परिस्थितियां: एनीमिया, थायरोइड डिस ऑर्डर, डायाबीटिस, दिल का दौरा, स्लिप एपनिया, क्रोनिक फेटिंग सिंड्रोम जैसी बीमारियां समेत अनेकों दाक्तरी परिस्थितियां थकान ला सकती है।

दवाइयां : एंटी हिस्टेमाइन्स, एंटी डिप्रेसेंट्स और ब्लड प्रेशर की दवाइयां जैसी कुछ दवाइयां का सेवन करने से उसकी साइड इफेक्ट के रुप में थकान जैसे हालात महसूस कर सकते है।

मानसिक स्वास्थ्य: डिप्रेशन और परेशानी जैसे हालात कईबार थकान की वजह होता है।

अन्य वजहे: प्रेगनेंसी, जेट लेग, शिफ्ट वर्क और पोषक तत्वों की कमी भी थकान ला सकते है।

थकान के आसार:

थकान के आसार अलग अलग रूप से दिखाई देते है। जैसेकी,

शारीरिक: थकान, दुर्बलता, मांशपेशियों में दर्द, सरदर्द, चक्कर आना और ध्यान केन्द्रित करने में अड़चने।

मानसिक: चिड़चिड़ापन, कोई निष्कर्ष पर पहुंचने में दुविधा, भूलने की बीमारी और एकाग्रता की कमी।

संवेदनात्मक: बार बार मूड बदलना, परेशानी और हताशा।

अगर लगातार जटिल तरीके से थकान महसूस करते है तब कोई डॉक्टरी हालाते तो जिम्मेदार नहीं है ना ये तय करने के लिए भी डॉक्टर का मार्गदर्शन लेना आवश्यक है।

थकान को दूर करने का उपायो:

थकान दूर करने के लिए कई बार जीवनशैली में बदलाव करना चाहिए, डॉक्टर का मार्गदर्शन और दुसरे प्रयासों का भी सहारा लेना चाहिए।

नींद को अग्रिमता दो: रोज रात को ७ से ८ घण्टे की गहरी और असरदार नींद की आदत डालें। नियमित रूप से नींद का शेड्यूल तय करो। आराम करने के लिए नींद के समय का नित्यक्रम बनाओ और सुनिश्चित करो कि, आपकी नींद गहरी, शांत और आरामदायक हो।

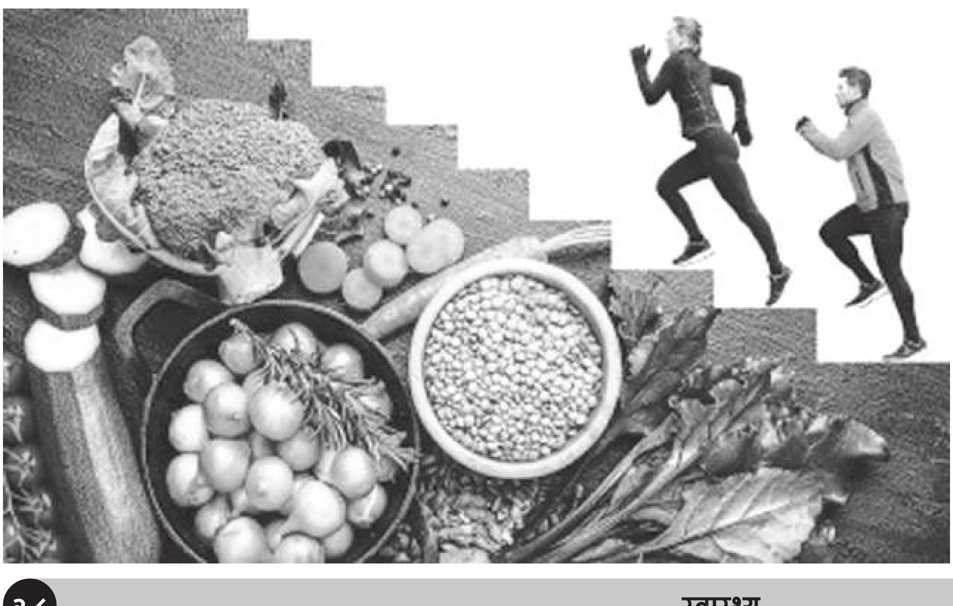

अनुकूल आहार का सेवन करो: ताजा फलें, भाजी तरकारी, हॉल ग्राइन और लीन प्रोटिन्स से समृद्ध संतुलित आहार पर ध्यान केंद्रित करो। प्रोसेस्ड फूड, चिनीयुक्त ड्रिंक्स और ज्यादा मात्रा में केफिन के सेवन से दूर रहना चाहिए। अगर आवश्यकता हो तो आहार विषारद का मार्गदर्शन ले सकते है।

नियमित व्यायाम: नियमित शारीरिक प्रवृतियां ऊर्जा स्तर को गति देते है। व्यायाम धींरे धींरे शुरु करना चाहिए और बाद में उसका समय थोडा थोडा बढ़ाना चाहिए। एक सप्ताह में कम से कम १५० मिनट का मध्यम?तीव्रता की व्यायाम या ७५ मिनट की भारी व्यायाम करने का लक्ष्यांक रखना चाहिए।

स्ट्रेस मैनेजमेंट: क्रोनिक स्ट्रेस से एनर्जी की मात्रा में कमी आ सकती है। गहरे सांस, ध्यान, योग या माइंडफुलनेस जैसी टेकनिक का अध्ययन करो। अगर तनाव बहुत ज्यादा महसूस हो तब व्यवसायिक मदद लेनी चाहिए।

दोस्तों, आशा है की आपकी थकान दूर करने में यह आर्टिकल आपको जरुर ही मदद करेगा और यहां दर्शाए गए उपायों से आप अवश्य ही तनाव मुक्त हो जाओ ऐसी कामना करते हैं।

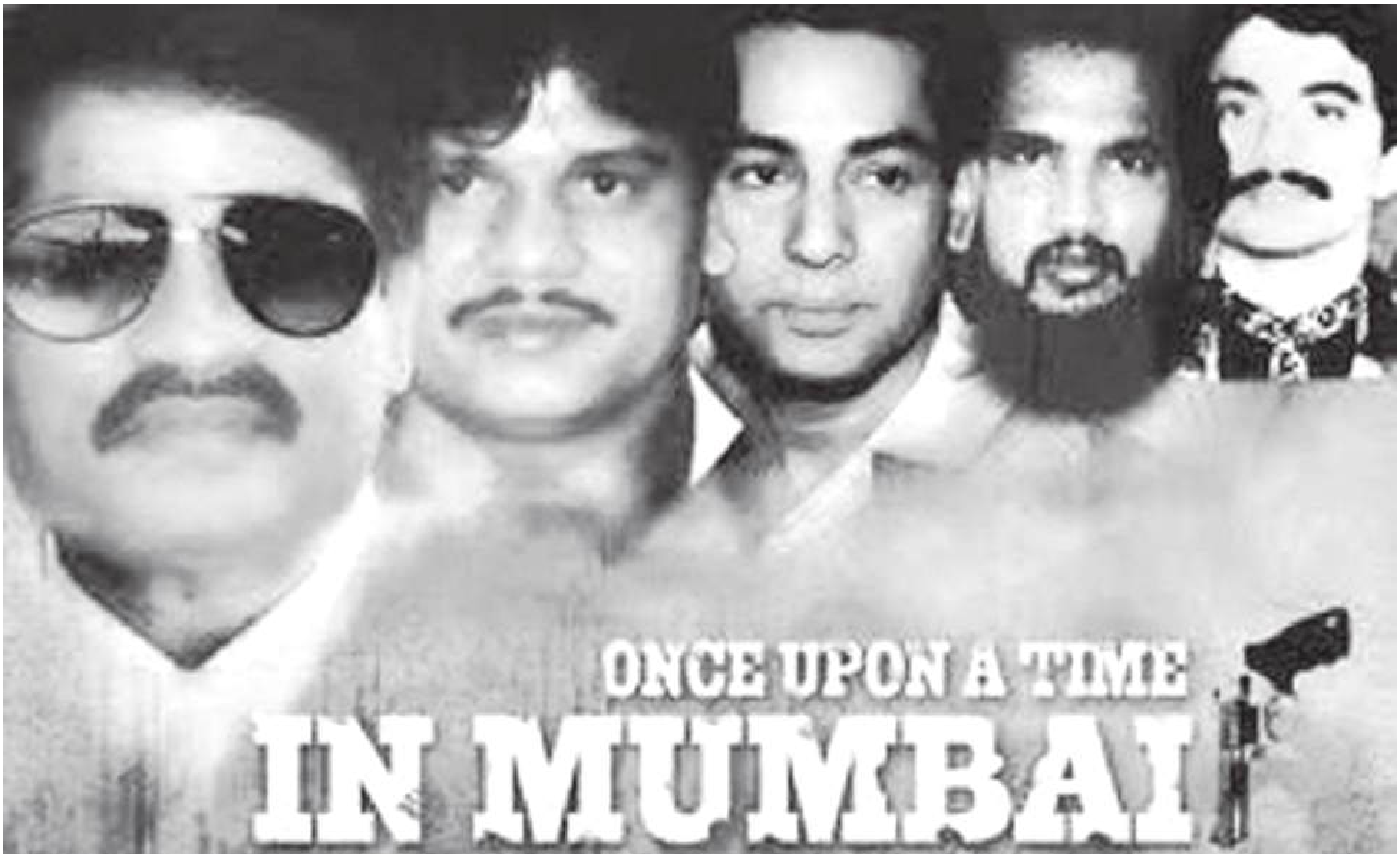

मुंबई के अंडरवर्ल्ड की खोफनाक बातें

दोस्तों, आपने पिछले अंक में देखा कि नतीक की हत्या से दाऊद एकदम से आगबबूला हो गया और इस हत्या के जिम्मेदार पठानों को चुन चुन कर मारने की कसम खाई। तब खालिद ने उसे आश्वासन दिया की वो उसके साथ है और वो किसी को नहीं छोड़ेंगे जब यह ख़बर अयूब को मिली के उसके पिछे अब दाऊद के लोग हाथ धो के पड़े हैं और वे कभी भी उसको मार सकते हैं तो उसने वहां से बचकर भागने का फ़ैसला कर लिया। अब आगे.....

खालिद के अचानक आ धमकने से अवाक अयूब जानता था की खालिद की आंखों में मौजूद वहशी चमक के पीछे उसके प्रति आतताई इरादो के अलावा और कुछ नहीं है। अयूब और उसके आदमियों ने अपने बचाव के लिए संघर्ष किया, लेकिन खालिद और उसके आदमियों की क्षमता के सामने उसके आदमियों की अच्छी खासी ताक़त भी नाकाम रही। उन्हों ने अयूब और उसकी गैंग के लोगों को बेरहमी से पीटा।

खालिद अयूब को डोंगरी के बाजार तक घसीटता हुआ ले गया। वो अयूब की कराहो से संतुष्ट नहीं हुआ और उसने अपना चाकू निकाला और धीरे -धीरे लेकिन पक्के तौर पे उसकी एडियों को काटना शुरू कर दिया, और उसे ईस अमानवीय यातना से भागने की हताश कोशिश में खुद को खसीट ले जाने के लिए उसके हाथों के रहम पर छोड़ दिया।

अब उसकी एड़ियों की शिराओं से रिसता हुआ खून सड़क पर फैल रहा था, तभी खालिद ने हल्के से अयूब के हाथ को थामा और उसकी कलई चीर दी। खून उछलकर ख़ुद उसके चेहरे पे फैल गया। अयूब मदद के लिए चीखता -पुकारता रहा उनको किसी ने नहीं सुना और उसके खून की धार कुण्ड में बदलती गई। हिलने में असमर्थ अयूब लाला बेतहाशा खून बहाता रहा और अन्त में उसने वहीं सड़क पर दम तोड़ दिया।

इस अमानवीय हत्या की ख़बर से पूरे शहर में सनसनी फ़ैल गई, उसकी गूंज बम्बई माफिया की गहराईयों में व्याप्त हो गई। दाऊद बेहद खुश था। इस हत्या ने उसकी हैसियत का सबूत दे दिया था। लेकिन नैतिक गिरावट अपने साथ विषैले पूर्वग्रह भी लेकर आती है। जो भी हो, दाऊद की राजनैतिक ताक़त ने रंग ले लिया था।

अयूब की हत्या के कुछ महीनों बाद, शराबखोर सईद बाटला डोंगरी की एक कलारी की तरफ़ बढ़ा। उसकी बेइंतहा शराबखोरी और भारी तोंद की वजह से उसे ''बाटला'' का खिताब मिला हुआ था। बाटला बाटली का बिगड़ा हुआ रूप था, जिसका मतलब बम्बई की लोकभाषा में बोतल हुआ करता था। सईद एक उजड्ड क़िस्म का बचकाना इंसान था जो शराब की बेइंतहा लत की वजह से घटिया क़िस्म की मर्दानी हरकतों में मुब्तिला रहा करता था। मसलन वह सड़क चलती औरतों के साथ ज़बरदस्ती करने के लिए बदनाम था।

ख़बर पाकर खालिद और उसके आदमियों ने बाटला का शिकार करने कलारी की तरफ़ कूच किया। दाऊद भी अपना धीरज खोकर इस हत्या का गवाह बनने और उसमें भागीदारी करने उनके साथ हो लिया। दाऊद की क्रूरता, उत्तरोत्तर उसकी योग्यता बनती जा रही थी।

दाऊद, खालिद और उनके आदमियों के लिए बाटला कलारी में लगभग नशे में धुत हालत में मिला। अचानक घर दबोचे जाने और नशे में डूबा होने की वजह से बाटला को अपने मोटे थोबड़े पर एक के बाद एक पड़ते प्रहारों को रोक पाने का जरा भी मौका नहीं मिला। अगर वो उस समय सोचने की भी हालत में भी होता, तो भी उसके पास कोई उपाय नहीं था, क्योंकी उन लोगों ने उसे कलारी में हर तरफ पटक – पटककर उसके चेहरे और जिस्म को बुरी तरह से घायल कर दिया था। तमाशबीन कलारी से बाहर चले गए, और बाटला सांस लेने के लिए जूझता वहीं फर्श पर पड़ा रह गया। हताश होकर उसने आज़ाद होने के लिए छटपटाना शुरू किया। तभी सहसा उसने महसूस किया कि दो आदमी उसके हाथ पकड़कर उसे उसी मेज़ की तरफ़ घसीटे लिए जा रहे हैं जहां वह बैठा था। उन लोगों ने उसके हाथ मेज पर रखे ल, तो उसने अपनी सूजी हुई आंखों की कोर से , क़रीब लटकते बल्ब की रोशनी में एक चाकू को चमकते हुए देखा। चेहरे पर एक अजीब सा भाव लिए खालिद मेज़ के क़रीब पहुंच गया।

जब बाटला ने अपना ठुका – पिटा सिर ऊपर उठाया, तो उसे जो एकमात्र आवाज़ सुनाई दी वह एक साफ़ किरकिराहट की आवाज़ थी जो मेज़ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दौड़ती चली गई, और उस दर्द की एक चीख भी सुनाई दी जो उसकी हथेली से उठकर, जिस्म से होती हुई दिमाग़ तक चली गई थी। उसने अभी – अभी अपनी एक अंगुली खो दी थी। खालिद उसकी एक एक अंगुली काटता चला गया, हर बार अगली अंगुली काटने से पहले अपने पिछले कृत्य का मजा लेता हुआ। चाकू की धार तले जैसे ही हड्डी टूटती और मेज पर खून फैलने लगता, खालिद अंगुली को पूरी तरह अलग नहीं करता था, इसके बजाय वह उसे चमड़ी में हिलगा रहने देता, और बाटला यातना से तड़पता हुआ कलारी के फर्श पर अपने घुटनों के बल बैठ जाता। उन्माद से भरा सुख देने वाला यह अमानवीय करतब दाऊद और उसे घेरे खड़े उसके आदमियों को सिर्फ आनंदित करता रहता था।

अपने आतंकित चेहरे पर दर्द के आंसुओं की लकीरें लिए बाटला किसी तरह छूट निकला और दरवाज़े की तरफ दौड़ा। वह कलारी से निकलकर डोंगरी पुलिस स्टेशन की तरफ़ भागा, जो पास ही में था; मानो नियति ने ही उसे वहां पर उसके लिए स्थापित किया हुआ था। यातना से चीखते हुए बाटला ने, अपने सारे गुनाह कबूल करते हुए, खुद को पुलिस को सुपुर्द कर दिया। नशे की हालत में भी बाटला जानता था कि वह सड़को की बजाय पुलिस के पास ज्यादा महफ़ूज़ होगा। दाऊद और उसके आदमियों ने कुछ दूर तक बाटला का पीछा किया, लेकिन जब वह पुलिस स्टेशन मे घुस गया तो उन्होंने पीछा करना बन्द कर दिया। वे जानते थे कि उसे वहां छुटकारा नहीं मिलने वाला है।

इस घटना के बाद बाटला ने चौदह साल जेल में बिताए। दाऊद ने खालिद पहलवान को मुसाफिरखाना में जाने के लिए कहा, जो डी गिरोह का मुख्यालय था। दाऊद अपना इरादा ज़ाहिर कर चुका था –उसे बुलंद और दो टूक ढंग से स्पष्ट कर चुका था। वह अपने मनमाफिक मुकाम की ओर बढ़ चला था और खालिद पहलवान के आगमन के साथ बम्बई माफिया में उसके दबदबे की शुरुआत हो चुकी थी।

भारत की सबसे बड़ी खुफिया एजेन्सी, द रिसर्च एण्ड एनालिसिस विंग (RAW) की स्थापना १९६२ में चीन युद्ध के अन्त में की गई थी। इसके पीछे इरादा देश के बाहर

भारत के खुफिया तंत्र की स्थिति को बेहतर बनाना था। शुरुआती स्तरों पर बीजू पटनायक ने इसमें मदद की थी क्योंकी वे वर्षो पहले, इंडोनेशिया पर डच लोगों की हुकूमत के दौरान इंडोनेशिया के राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता सुकर्णो की जान बचाने के लिए खुद जकार्ता तक हवाई जहाज़ उड़ाकर ले गए थे और इसलिए वे ''दुश्मन इलाके में घुसकर काम करने'' के लिए जाने जाते थे।

RAW सीधे प्रधानमन्त्री सचिवालय के अधीन था। इन्दिरा गांधी पहली प्रधानमन्त्री थी जिन्होंने देश के भीतर राजनैतिक जासूसी के लिए इसका इस्तेमाल किया था। इसका लाभ इसकी ठोस बनावट और इससे जुड़े वे लॉग थे जो या तो आला दर्जे का अकादमिक रिकॉर्ड रखते थे या विश्वसनीय और शीर्ष स्तर के प्रशासनिक या पुलिस अधिकारियों के साथ रिश्ता रखते थे। RAW ने सरकार के विरोधियों के बारे में, कोंग्रेस पार्टी के अंदरूनी अलाचोकों के बारे में, नौकरशाहों और पत्रकारों के बारे में फाइलें तैयार कर रखी थी। विरोधियों की सूचि तैयार करना कोई समस्या नहीं थी; RAW की फाइलों में हर चीज़ तैयार होती थी।

यह महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री वी। पी। नायक और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के बीच की बैठक थी जिसमें यह बात तय पाई गई कि माफिया पर खुफिया तंत्र या निषेध के मार्फत लगाम नहीं कसी जा सकती; बल्कि इसके लिए एक ऐसे कठोर कानून की दरकार है जिसमें मुरव्वत की कोई गुंजाइश न हो। चूंकि माफिया देश को अत्यन्त अत्यंत समृद्ध क्षेत्रों (गुजरात और बम्बई) में बहुत बड़ा सिरदर्द बन चुका था।

और इस तरह उन कठोर कानूनों की अधिसूचना और क्रियान्वयन की शुरुआत हुई जो अब तक देखने सुनने में नहीं आए थे। द मेंटेनेंस ऑफ़ इंटर्नल सिक्योरिटी एक्ट (MISA) में १९७४ में संशोधन कर सरकार को अधिकृत कर दिया गया था की वह किसी भी व्यक्ति को उसके खिलाफ़ अदालत में आरोप पत्र पेश किए बगैर नजरबंद या गिरफ्तार कर सकती है। हालांकि जब यह कानून बना तो सरकार ने संसद में विरोधी पक्ष को यकीन दिलाया था कि इसका इस्तेमाल राजनैतिक विरोधियों को हिरासत में लेने के लिए नहीं किया जाएगा। MISA अपने मूल रूप में १९७१ में बना था जिसके बाद से उसमें कई संशोधन हो चूके थे।

बीस सूत्रीय कार्यक्रम के अंतर्गत इन्दिरा गांधी ने जो सूत्र इकट्ठे किए थे उनमें से एक सूत्र तस्करों की सम्पत्ति जप्त करने के लिए एक विशेष विधेयक लाना भी था। उन्हों ने यह भी कह रखा था कि MISA का इस्तेमाल तस्करों को पकड़ने के लिए किया जाएगा। दरअसल, इनकी गतिविधियाँ तो विश्वव्यापी थी, लेकिन उनके केन्द्र मुम्बई में स्थित थे, तस्करी के लिए पैसा मुहैया कराने और उसमें निहित जोखिम के विरुद्ध सुरक्षा उपलब्ध कराने बैंको और बीमा कंपनियों ने अपने ऑफ़िस वहां खोल रखे थे। समुद्री, जमीनी और हवाई रास्ते से ट्रांसपोर्ट का एक विस्तृत नेटवर्क खड़ा किया जा चुका था। गुजरात से लेकर केरल तक फैली हुई वे जगहें चिन्हित थीं जहां से तस्करी का सामान उठाया जाता था और फिर से देश भर के कई उपभोक्ता केंद्रों पर ढोकर के जाया जाता था।

मद्रास तस्करों का गढ़ था जबकि बैंगलोर उनके लिए वह सुरक्षित जगह हुआ करती थी जहां मिल बैठकर वे स्थितियों का जायजा लेते थे। उनके अपने गोदाम, बाज़ार और कारोबार के नियम थे। तस्करों और काले धन का लेन देन करने वालों के बीच सीधा संपर्क था।

सरकार चूंकि तस्करो, अपराधियों, चोरबाजारी के कारोबार में लगे लोगों के खिलाफ जंगी पैमाने पर सक्रिय थी, उसने देश पर और कड़ी लगाम कसने का फ़ैसला किया और २६ जून, १९७५ को आपातकाल की घोषणा कर दी। ज़रूरी चीज़ों की कीमतों में स्थिरता आपातकाल की एक मुख्य उपलब्धि थी। स्कूलो, दुकानों, रेलगाड़ियों और बसों पर अनुशासन के असर दिखाई देने लगे। और माफिया भी, असरदार ढंग से, आपातकाल के उन्नीस महीनों के दौरान भूमिगत हो गए। उधर राजनैतिक मोर्चे पर, नवनिर्मित बांग्लादेश के राष्ट्रपति शेख़ मुजीबुर रहमान और उनके ज्यादातर परिवार के लोगों की १४अगस्त को की गई नृशंस हत्या ने नई दिल्ली में हलचल पैदा कर दी। इस हादसे से जरा भी अंदाज़ा न तो RAW को था न किसी अन्य खुफिया तंत्र को। उन्होंने एक बार फिर श्रीमति गांधी को नाकामयाब कर दिया था। उनके बेटे और विश्वस्त सहयोगी संजय गांधीने RAW को ''रिलेटिव्स ऑफ वाइव्स एसोसिएशन'' (बीवियों के संघ के रिश्तेदार) कहकर पुकारना शुरू कर दिया; संगठन में आला RAW अधिकारियों के बहुत ही ''रिश्तेदार'' थे। बांग्लादेश के बारे में पहले से खुफिया रिपोर्ट हासिल न कर पाने को लेकर इंदिरा गांधीने RAW के चीफ रामजी काव के प्रति अपनी नाराज़गी जताई। जो चीज़ उन्हें परेशान करने वाली थी वह यह थी कि अगर

खुफिया तंत्र ने उन्हें बांग्लादेश के मामले में नाकामयाब किया था, तो वह उन्हें भारत के मामले में भी नाकामयाब कर सकता था: आपातकाल हालांकि राजनैतिक वजहों से और संसद पर अपनी प्रभुता कायम रखने की महत्वाकांक्षा के चलते आरोपित किया गया था, लेकिन उसने भारत के मीडिया को अपाहिज बनाकर रख दिया और आम आदमी को उसके बुनियादी हकों से वंचित कर दिया था। बम्बई माफिया के लिए तो वह, बेशक , मौत का झटका था।

यह पहली बार था जब संसद के भीतर बम्बई के तस्करों, हाजी मस्तान, यूसुफ पटेल और सुकर बखिया के नामों का ज़िक्र हुआ था। और सरकार के लिए हरकत में आने के लिए इतना काफी था।

मस्तान, जो पहले से ही MISA के अंतर्गत १७ सितम्बर से १९ दिसम्बर, १९७४ तक, ९० दिनों के लिए हिरासत में था, उसे अपनी अगली योजना के लिए लोगों के साथ बात तक करने का मौक़ा नहीं मिल पाया क्योंकि सरकार ने उसे एक और कानून - कंजरवेशन ऑफ़ फोरेन एक्सचेंज एण्ड प्रिवेंशन ऑफ स्मेगलिंग एक्ट (COFEPOSA) के अंतर्गत आरोप के घेरे में ले लिया। राम जेठमलानी जैसे अपराधिक मामलों के श्रेष्ठ वकील की सेवाएं लेने के बावजूद मस्तान को आपातकाल का पूरा वक्त जेल में ही बिताना पड़ा।

१ जुलाई, १९७५ को एक अध्यादेश जारी किया गया जिसके अन्तर्गत कोफेपोसा के अधीन गिरफ़्तार व्यक्ति को उसकी गिरफ़्तारी का आधार बताया जाना जरुरी नहीं रह गया। आपातकाल आरोपित करने के पीछे इन्दिरा गांधी की राजनैतिक मजबूरियां जो भी रही हों, लेकिन वह तस्करों के खिलाफ़ निर्मम बल प्रयोग का युग ज़रूर बन गया था। बड़ी तादाद में काला धन खोद निकाला गया था और ढेर सारे व्यापारियों को ''आर्थिक अपराधों'' के लिए MISA के अन्तर्गत बन्द कर दिया गया था।

बम्बई का आर्थर रोड जेल, थाने सेन्ट्रल जेल, पुणे का यरवदा जेल, औरंगाबाद का हरसूल जेल, सारे के सारे जेल उन कैदियों से पूरे भरे हुए थे जिनमें से ज्यादातर अपराधी, तस्कर, आर्थिक अपराधी, गुण्डे और चोर बाजारी करनेवाले थे।

अगर मस्तान MISA और कोफेपोसा के अधीन बन्द था, तो वरदाराजन, करीम लाला, दाऊद इब्राहीम, पठान, रमा नाईक और अरुण गवली जैसे दूसरे लोग नेशनल सिक्योरिटी एक्ट (NSA) के अन्तर्गत पकड़े और बन्द किए गए थे, एक तरह से इसने सारे गिरोहबाजों को एक दूसरे के क़रीब ला दिया था। उन लोगों को भी जिनका इसके पहले तक कभी एक दूसरे से औपचारिक परिचय भी नहीं हुआ था। मसलन, नाईक और वरदा के बीच जो रिश्ता कायम हुआ वह इतना प्रगाढ़ हो गया कि वे इस पर बात करने लगे कि वसई और विरार की गोदियों को तस्करी के लिए कैसे बरता जाए। यह वह योजना थी जिस पर वे अपनी रिहाई के बाद अंततः अमल करने में कामयाब हुए थे।

तत्कालीन पुलिस कमिशनर एस. वी. टंकीवाला, जो आपातकाल लगाए जाने के कुछ ही हफ्तों बाद पुलिस चीफ नियुक्त हुए थे, ने केंद्रीय गृह मंत्रालय को अपनी एक रिर्पोट में लिखा था: ''तस्करी विरोधी अभियान ने तस्करी के व्यापार को प सिर्फ खतरनाक बना दिया था बल्कि खर्चीला भी बना दिया था। हाजी मस्तान और यूसुफ पटेल जैसे आला दर्जे के तस्करों समेत कोई २८८ तस्कर गिरफ़्तार किए गए थे और १७७ तस्करों की संपत्तियां जप्त कर ली गई थी।''

हालांकि, हाजी मस्तान और करीम लाला जैसे लोग, जिन्हें कोई दो बरस सलाखों के पीछे बिताने पड़े थे, समझ चुके थे कि आखिरी मुकाम तक पहुंच चुके थे। उन्हे लग गया था कि वे सरकार के खिलाफ एक हारी हुई लड़ाई लड़ रहे हैं और अगर उन्होने सरकार को इस बात का यकीन नहीं दिलाया कि आगे से वे किसी भी तरह की गैरकानूनी गतिविधि में मुब्तिला नहीं होंगे, तो उन्हें पूरी जिन्दगी जेल में गुजारनी पड़ सकती हैं।

जब १९७७ में आपातकाल उठा लिया और जनता पार्टी सत्ता में आई, तो मस्तान और करीम लाला दोनों ने जयप्रकाश नारायण से फरियाद की कि वे हस्तक्षेप कर तत्कालिन प्रधानमंत्री से उनके प्रति दया दिखाने का आग्रह करें। दोनों ने ही शपथपत्र दाखिल कर सरकार से वादा किया कि आगे से वे किसी भी क़िस्म की गैरकानूनी गतिविधि में शामिल नहीं होंगे। मोरारजी देसाई के राज ने उनकी फ़रियाद को मंजूर कर लिया और वे रिहा हो गए।

बाद में, दाऊद, उसका भाई सबीर, गवली, नाईक जैसे गिरोहबाजों और दूसरे अपराधियों ने जमानत की अर्जियां दाखिल की, चूंकि उनके खिलाफ लगाए गए आरोप गंभीर नहीं थे और उनके खिलाफ़ पर्याप्त सबूत नहीं थे। इसलिए वे लॉग भी अदालत से जमानत हासिल करने में कामयाब रहे।

HOTEL
Capital

We're
located
in Center of
Rajkot

Available A/C & Non A/C Rooms

Vijay Chavda

Contact us :
99746 99748
97079 00009

Kishanpara Chowk, Race Course
Ring Road, Rajkot-1

hotelcapitalrajkot@gmail.com

ડૉ. પ્રતાપસિંહ ડોડીયા

Consultant General and Laparoscopic Surgeon

Fellowship in minimal access surgery from
World Laparoscopic Hospital, Gurgoan, Delhi.
Ex. Consultant Laparoscopic Surgeon at
H J Doshi Hospital & Pragati Hospital, Rajkot.
Wide Experience in Laparoscopic, Anorectal & GI Surgeries

ઉપલબ્ધ સારવારો :

- પેટનાં તમામ રોગોનું સચોટ નિદાન અને સારવાર
- દુરબીનથી એપેન્ડિક્સ, પિત્તાશય, આંતરડા, અંડાશય તથા ગર્ભાશયના ઓપરેશનો
- દુરબીનથી તમામ પ્રકારની સારણગાંઠના (હર્નીયા) ઓપરેશન
- હરસ, મસા - ભગંદર ની અતિ આધુનિક પધ્ધતિથી સારવાર
- મસા (પાઈલ્સ) નું દુખાવા રહિત ઓપરેશન (સ્ટેપ્લર)
- દાજેલા દર્દીઓની સારવાર
- તમામ પ્રકારની પ્લાસ્ટિક સર્જરીની સુવિધા
- એક્સિડેન્ટ કેસ અને મેડીકોલીગલ (MLC) કેશની સુવિધા
- તમામ પ્રકારના કેન્સરનું નિદાન અને સારવાર

ઉપલબ્ધ સુવિધાઓ :

- ૫૦ બેડની, ૧૭૦૦૦ સ્કવેર ફીટ બાંધકામ સાથેની અધતન હોસ્પિટલ
- ૧૭ બેડનુ અત્યાધુનીક (લેવલ-૩) મેડીકલ, સર્જીકલ અને રીકવરી ICU
- સૌરાષ્ટ્ર માં સૌ પ્રથમ અતી આધુનીક GE Carescape
- આંતરરાષ્ટ્રીય કક્ષા નુ ચકકર અને બેલેન્સ નું નિદાન તથા સારવાર કેન્દ્ર
- SLED-Online HDF ડાયાલીસીસ
- અત્યાધુનીક ૨ ઓપરેશન થીએટર
- હાયટેક IITV મશીન દ્વારા દરેક પ્રકારનાં હાડકાનાં ઓપરેશનો.
- હાડકાનો વિભાગ તથા સાંધા બદલાવવા ના ઓપરેશનો
- મેડીકલેઈમ તથા કેશલેસ ની સુવિધા
- એકસ-રે, સોનોગ્રાફી તથા Echo કાર્ડીયોગ્રામ

In house 24 X 7

- ઈમરજન્સી સારવાર
- એમ્બ્યુલન્સ સુવિધા
- લેબોરેટરી
- રેડીયોલોજી
- મેડીકલ સ્ટોર

Genesis
MULTISPECIALITY HOSPITAL
॥ आयुष्यमान भवः ॥

બાપા સીતારામ ચોક, પેરેડાઈઝ હોલ રોડ,
રૈયા ચોકડી પાસે, રૈયા રોડ, રાજકોટ-૩૬૦૦૦૭

૭૫૭૪ ૦૦૦ ૫૦૯, ૦૨૮૧-૨૫૮ ૪૮૪૮/૪૯

14, DWARKESH APARTMENT, OPP. MAYUR TALKIES, SUBHASH ROAD,
KANDIVALI (W), MUMBI-400 067. TEL.: 28618032 / 2806

અમદાવાદમાં નારાયણી ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ દ્વારા ચાંદખેડામાં માતા-પિતા વિનાની ૧૦૧ દિકરીઓના સમૂહલગ્ન સંપન્ન

- નવયુગલોને જીવનભર સાથ રહેવાના શપથ લેવડાવાયા.

આ સમુહલગ્ન પ્રસંગે નારાયણી ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટના પ્રમુખ શ્રી લક્ષ્મી વિજયેતા, ગુજરાત પ્રદેશ ભાજપ પ્રમુખ શ્રી સી.આર. પાટીલ,રાજયસભાના સાંસદ અને ભામાસા શ્રી બાબુભાઇ દેસાઇ તેમજ વિવિધ સમાજના અગ્રણીઓએ ઉપસ્થિત રહી નવદંપતીઓને આર્શિવચન પાઠવ્યા હતા.

શ્રી નારાયણી ચેરીટેબલ ટ્રસ્ટ, ચાંદખેડા, અમદાવાદ.

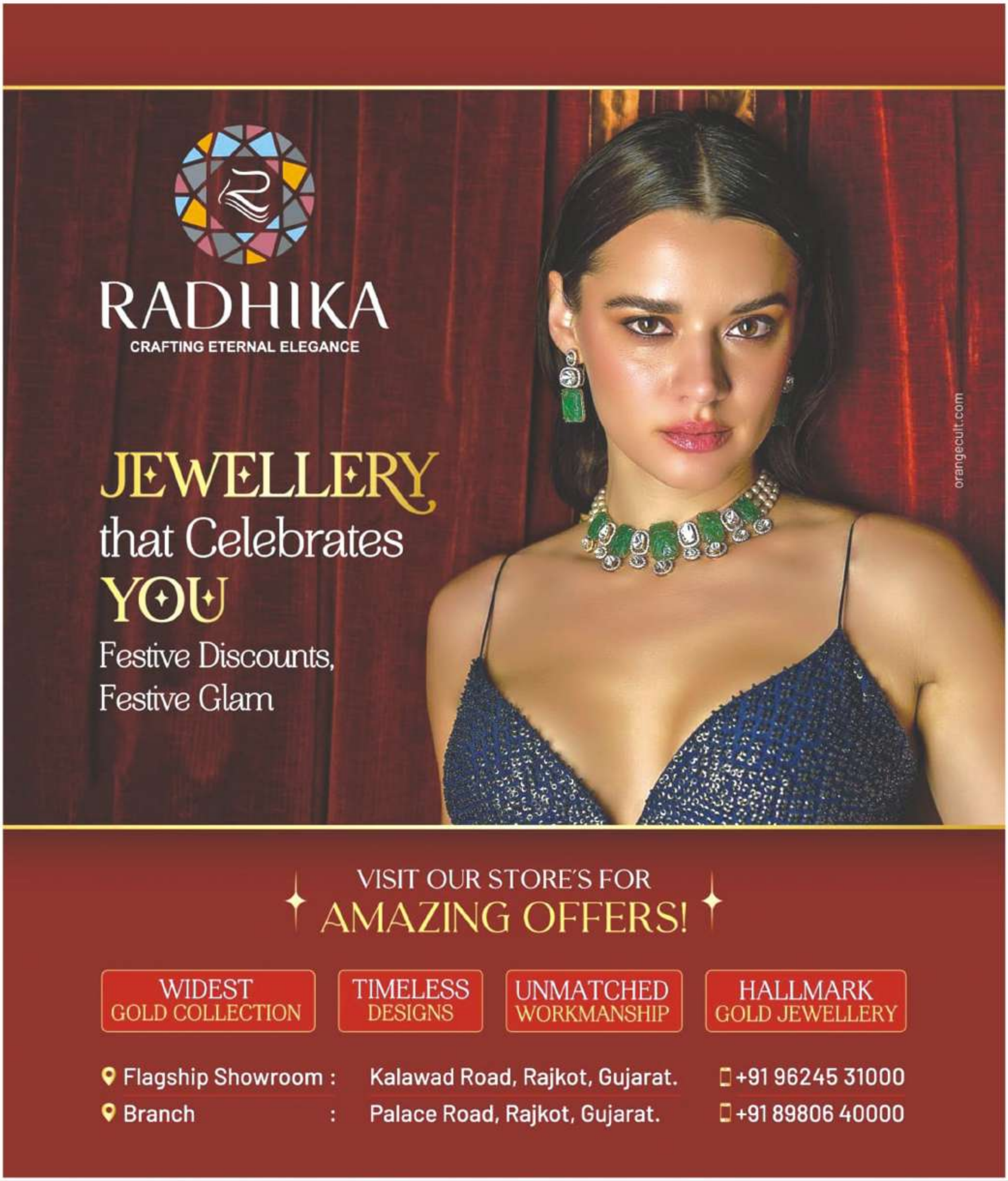

If Undelivered, Please return to :

Raj Complex, Opp. Star Plaza,
Fulchhab Chowk,
Rajkot - 360 001.

To,